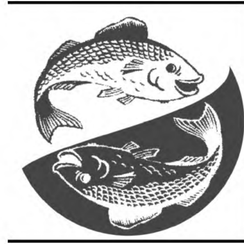
अनचिन्हार आखर

अनचिन्हार आखर

आशीष अनचिन्हार



श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

ISBN :978-93-80538-48-8
दाम: 100/-

पहिल संस्करण : 2011

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),
मो.- 09572450405, 09931654742

ANCHINHAR AAKHAR: by ASHISH ANCHINHAR
A collection of Maithili Ghazal, Rubai and Kata

गजलक संक्षिप्त परिचय

गजल मने प्रेमिकाक आँचर सेहो होइएत, गजल मने हिरणीक दर्द भरल आवाज सेहो होइत छैक, गजल मने प्रेमी-प्रेमीकाक गप्प सेहो होइत छैक। कहबाक तात्पर्य जे जतेक विद्वान ततेक परिभाषा। तथापि जँ गजलक एकटा सर्वमान्य परिभाषा चुनबाक हएत तँ हमरा हिसाबें अरबी भाषामे जे पहिल अर्थ धूनब (जेना तूर धूनब) आ दोसर प्रेमालाप होइत छैक; हमरा हिसाबें ई दूनू अर्थ ठीक छैक। जँ पहिल अर्थ धूनब लेबै तँ जहिना तूरकें धुनलासँ शुद्ध तूर बहराइ छैक आ थोड़बे तूर बेसी भऽ जाइत छैक तहिना आखर (word) कें अनुभवसँ धूनि थोड़बे आखरसँ भावनाक रंगबिरही महलकें ठाढ़ करब गजल भेल। आ जँ दोसर अर्थ प्रेमालाप लेबै तँ कने सूक्ष्म रुपमे जाए पड़त। स्थूल रुपें देखलासँ गजल सामान्य प्रेमी-प्रेमिकाक वचन लागत मुदा वस्तुतः गजलमे आत्मा प्रेमिका आ परमात्मा प्रेमीक रुपमे अबैत अछि।

गजल मूलतः अरबी शब्द छैक तँए ई बुझबामे कोनो भाँगठ नै जे गजल नामक काव्य सर्वप्रथम अरबी भाषा कहल गेल। ऐठाम ई कहब उचित जे शाइरी केखनो लिखल नै वरन कहल जाइत छैक। ऐठाम शाइरी मने गजल समेत सभ काव्य विधा भेल। गजलक जन्म आ विकासकें जनबासँ पहिने अरब देशक ऐतिहासिकताकें जानब बेसी जरुरी अछि। इस्लाम धर्मक जन्मसँ पहिनेक समयकें जमानः-ए-जाहिलियः कहल जाइत छैक, जकर मतलब अछि "अन्हार युग"। अन्हार युगमे जइ तरहक काव्य रचल गेल ओ मूलतः अपन-अपन कबीलाक प्रशंसा आ विपक्षी कबीलाक खिद्धांशसँ भरल अछि आ ऐ काव्य शैलीकें कसीदा कहल जाइत छैक। ऐ युगमे मुतनब्बी नामक शाइर महत्वपूर्ण छथि।

कसीदामे जखन प्रेमक प्रवेश भेल तखनेसँ गजलक जन्म हेबाक संभावना अछि। आ ऐ प्रयोगक श्रेय इमरउल कैस (५३९ इ.) कें जाइत छन्हि। अरबी साहित्य विशेषज्ञ सभक मानब छन्हि जे इमरउल कैस अन्हार युगक पहिल शाइर छथि जे गजल कहब शुरु केलथि। संगहि-संग कैसे एहन पहिल शाइर छथि जे अपन प्रियतमकें खसल दयार (दयार मने डीह) पर कानि कऽ गजल कहबाक परंपरा शुरु केलथि। कैसक अलावे अरबीमे अन्तरह्-बिन-शद्दाह-अल-अबसी (५२५-६१५ इ.) अपन गजल-उल-अजरी मने पवित्र प्रेमक गजल लेल प्रसिद्ध भेलाह। अरबीक शाइर अहदे--उमवीक (६६१-७४९ इ.) योगदान गजलमे सर्वाधिक अछि। तँए विद्वान लोकनि ऐ युगकें उमवी युग कहैत छथि। उमवी समयमे मक्का आ मदीना शाइर आ कलाकारक केन्द्र छल। जइ कबीला (खानदान) मे पैगम्बर हजरत मोहम्मदक जन्म भेलन्हि ओइ कबीलामे शाइर उमर-बिन-अबी रबीय (६४३-७११ इ.)क जन्म सेहो भेलन्हि। ई. ७०१मे जन्मल जमील बुसीन विशुद्ध गजलगो शाइर छलाह। बुसीन वस्तुतः जमीलक प्रेमिकाक नाम छल जकरा जमील अपन तखल्लुस (उपनाम) क रुपमे प्रयोग करैत छलाह। आब ऐ समय धरि गजलक विषय मात्र शारीरिक नै रहि भावनात्मक भऽ गेलैक। प्रसिद्ध शाइर उमरु-बिन-कुल-सूम अतगलबी अपन गजलक शुरुआत प्रेमिकाक देहसँ नै वरन जाम-ओ-मीनासँ करैत छथि।

इस्लामक जन्मक पछाति अरबी शाइरीक विषय तँ बदलबे केलै संगहि-संग इस्लाम जखन इरान इराक पहुँचल तँ गजल सेहो ओतऽ पहुँचि गेलै। आ ऐ तरहें आब फारसीमे सेहो गजल कहनाइ शुरु भेल। फारसीमे गजलगोइ नवम शताब्दीक अंतसँ शुरु भेल। मुदा ऐठाम ई कहबामे कोनो संकोच नै जे फारसीमे कहल गजल अरबी गजलसँ बेसी नीक, समृद्ध, उदार आ भावनासँ परिपूर्ण अछि। एकर कारण ई जे अरबक तुलनामे इरान सभ्यता-संस्कृतिक मामिलेमे बेसी विकसित छल। फारसीमे संभवतः रुदकी समरकन्दी पहिल शाइर छथि जे गजल कहलथि। रुदकी गजलक अलावे कसीदा, रुबाइ, मनसवी आदि सेहो कहलथि।

फारसीक लगभग सभ महत्वपूर्ण शाइर गजल कहलथि, जेना शेख सादी, रुमी, ख्वाजू किरमानी, हाफ़िज, शिराजी इत्यादि। फारसी गजलमे कमाल खजन्दी महत्वपूर्ण हस्ताक्षर छलाह। ऐ सबहक अलाबे ओइ समयमे उर्फी, मजीरी, तालिब, कलीम आ सायब सभ सेहो गजलक विकास अपना-अपना तरीकासँ केलथि। एकटा आर गप्प- फारसी गजलमे सायबके तमसील (मने दृष्टान्त)क बादशाह मानल जाइत अछि, मुदा ओ स्वयं ऐ कलाक उस्ताद गनी काश्मीरीकें बुझैत छलाह। आ हुनकासँ भेंट करबाक लेल भारत (फारसी इतिहासमे हिन्दोस्तान) सेहो आएल छलाह। फारसी गजलक संबंधमे दूटा गप्प आर। पहिल जे अमीर खुसरो "अमीर ख़ुसरो देहलवी"क नामे भारतसँ बेसी इरानमे प्रसिद्ध छलाह। आ दोसर गप्प जे सफवी युगमे इरान शासक सबहक अकृपाक कारणे बहुत शाइर सभ भारत आबि बसि गेलाह। एहने क्रममे शाइर शैख- अली-हर्फी-इस्फाहानी बनारस आबि गेलाह। सन १७६५इ.मे हुनक मृत्यु भेलन्हि । आ एहने समयमे भारतक माटिपर गजल अपन गमक पसारि देलक। ऐठाम ई मोन राखब उचित जे भारतमे अमीर खुसरोकें पहिल गजलगो मानल जाइत अछि। आ ऐ गमकक किछु कण मीर, गालिब जेहन शाइरक जन्म देलक। आ तकरा बाद आस्ते-आस्ते उर्दू शाइरीक जन्म भेल। मोहम्मद वली कुतुबशाह उर्दूक ओ पहिल शाइर छथि जनिकर दीवान (गजल संकलन) प्रकाशित भेलन्हि। कुतुबशाहक बाद जे शाइर भेलाह ओ छथि--गव्वासी, वजही, बह्री इत्यादि। आ उर्दूक संग-संग गजल मिथिलाक माटिपर सेहो पसरल जकर पहिल उदाहरण कविवर जीवन झाक नाटक सुन्दर-

संयोगमे भेटैत अछि।

गजल कोना कहल जाइत छैक**?** आब ऐ प्रश्नपर चली। सभसँ पहिने जे शाइरी सदिखन कहल जाइत छैक लिखल नै। आब अहाँ एकरा अरबी प्रकिया मानि मूँह नै घोकचा लेब। हिन्दु धर्मक चारु वेद लिखल नै कहल गेल छैक। आ शाइरी सेहो वेदे जकाँ कहल जाइत छैक। शाइरी विशुद्ध रुपसँ उच्चारणपर निर्भर अछि। तँए गजल कहल जाइत छैक लिखल नै। आब ई कही जे गजल किछु शेरक संग्रह होइत छैक (कमसँ कम पाँच आ बेसीसँ बेसी सत्रह)। जँ सत्रहसँ बेसी शेर देबाक हुअए तँ फेरसँ एकटा मतला कहू आ शेर कहैत चलू। आ एना दूगजला, तीनगजला, चौगजला होइत रहत। ओना गजलक संबंधमे ईहो धेआन राखब जरूरी जे प्राचीन गजलगो गजलमे ताक (विषम) संख्या रखैत छलाह जेना ५, ७,९ आदि। एकर कारण इ कहल जाइत अछि जे पहिने गजलक विषय विरह युक्त प्रेम छल तँए जुफ़्त (सम) के छोड़ि ताक (विषम) के प्राथमिकता देल जाइत छलै। मुदा आधुनिक गजलगो एहि रुढ़िके तोड़ि देने छथि। आब इ बूझी जे शेर की थिक। शेर सदिखन दू पाँतिक होइत छैक आ शाइर जे कहए चाहैत अछि ओ दुइये पाँति मे खत्म भए जेबाक चाही, अन्यथा ओ गजलक लेल उपयुक्त नहि। आ एहन-एहन गजल जकर हरेक शेरमे अलग-अलग बात कहल गेल हो ओकरा "गैर-मुसल्सल" गजल कहल जाइत छैक। किछु गजल एहनो होइत छैक जकर हरेक शेर एकै विषय पर रहैत छैक। एहि प्रकारक गजलके "मुसल्सल" गजल कहल जाइत छैक, मुदा "मुसल्सल" गजल बेसी नीक नहि मानल जाइत अछि। उर्दूमे पाँतिकेँ "मिसरा" कहल जाइत छैक। शेरक पहिल पाँतिकेँ "मिसरा-ए-उला" आ दोसर पाँतिकेँ "मिसरा-ए-सानी" कहल जाइत छैक।

आब शेरक किछु उदाहरण देखू -

अला हुब्बी बे-सेहने की फ़ सबहीना

वला तब्की खमूरल अन्दरीना

अर्थ-- ऐ साकी सुन पेआला उठा कए हमरा एतेक जामे-सुबूही (जामे-सुबूही मने भोरक बचल शराबक पेआला) दे की जइसँ अन्दरीना (अन्दरीना सीरीया देशक एकटा जगहक नाम अछि) मे एकौ ठोप शराब नै बचै।

(भाषा- अरबी, शाइर- उमरु-बिन-कुल-सूम अतगलबी)

अगर आ तुर्के-शीराजी बदस्त आरद दिले-मारा

ब-खाले हिन्दुवश बख़शम समरकन्दो बुखारा रा

अर्थ-- जँ ओ सुन्दरि महबूब हमर करेज चोरा लेथि तँ हम हुनकर एकटा तिलपर समरकंद आ बुखारा सन-सन देश हुनका दऽ देबन्हि।

(भाषा- फारसी, शाइर- हाफिज शीराजी)

उनके आ जाने से आ जाती है मुँह पर रौनक

वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है

(भाषा-उर्दू, शाइर गालिब)

बाट तकैत दिन बीति जाएत बुझलिऐ
आस तकैत जिनगी बिताएत बुझलिऐ
(भाषा- मैथिली, शाइर गजेन्द्र ठाकुर)

लड़कीकेँ जाति नहि होइत छैक
लड़का अजाति नहि होइत छैक
(भाषा-मैथिली- शाइर रोशन झा)
भागब कोनाक दूर जिनगी सँ
डरब किया मृत्यु केर चिनगी सँ
(भाषा-मैथिली- शाइर प्रवीण चौधरी "प्रतीक")
अहाँ संग प्रेम करबा पर बिर्त हम

अपटी खेतमे मरबा पर बिर्त हम

(भाषा- मैथिली, शाइर आशीष अनचिन्हार)

जँ उपरका शेर सभके देखबै तँ पता लागत जे ई सभ दुइये पाँतिके छैक आ जे बात कहल गेल छैक से पूरा-पूरी छैक। इएह भेल शेर। गजलसँ जुड़ल किछु आर पारिभाषिक शब्द देल जा रहल अछि। बिना एकरा बुझने गजल नै बुझल जा सकैए।

१) मतला--"मतला" गजलक ओइ पहिल शेरकेँ कहल जाइत छैक जकर दूनू पाँतिमे काफिया आ रदीफ रहै। एकटा गजल उदाहरणक लेल देल जा रहल अछि।

अपन आँखिमे बसा **लिअ हमरा**

अपन श्वासमे नुका **लिअ हमरा**

जहाँ मरितो जीबाक आस रहए

ओहने ठाम तँ बजा **लिअ हमरा**

हाथ सटेलासँ मोन केना भरतै

अहाँ करेजसँ सटा **लिअ हमरा**

ऐ गजलक पहिल शेरक पहिल पाँतिमे काफिया "आ"क मात्रा अछि (केना से काफियाबला खंडमे पता चलत) आ रदीफ " लिअ हमरा" अछि। तेनाहिते शेरक दोसरो पाँतिमे काफिया "आ"क मात्रा अछि आ रदीफ "लिअ हमरा"। संगहि-संग ई शेर गजलक पहिल शेर अछि, तँए ई भेल मतला। आब दोसर शेरपर आउ, मतलाक बाद ई कोनो जरुरी नै छैक जे दूनू पाँतिमे काफिया आ रदीफ हुअए। मुदा मतलाक बला शेरक बाद जे शेर छैक तकर दोसर पाँतिमे काफिया आ रदीफक रहब अनिवार्य। उपरके गजलकेँ देखू मतलाक बाद जे शेर अछि---

"जहाँ मरितो जीबाक आस रहए

"ओहने ठाम तँ बजा **लिअ हमरा"**

ऐ शेरमे देखू पहिल पाँतिमे ने रदीफ छैक आ ने काफिया मुदा दोसर पाँतिमे काफिया सेहो छैक आ रदीफ सेहो। अन्य शेरक लेल एहने सन बुझू। ओना मतलाक बाद जे मतला आबए तँ ई शाइरक क्षमताकेँ देखबैत छैक आ गजलकेँ आर बेसी सुन्दर बनबैत छैक। तएँ ओकरा हुस्ने-मतला कहल जाइत छैक। ओना शाइर चाहए तँ गजलक सभ शेरकेँ मतलाक रूपमे दऽ सकैए। बिना रदीफक गजल सेहो होइत छैक जकरा "गैर-मुरद्दफ" गजल कहल जाइत छैक मुदा काफिया रहब बिलकुल अनिवार्य।

२) रदीफ-- रदीफ मतला बला शेरक दूनू पाँतिक ओइ अंतिम हिस्साकेँ कहल जाइत छैक जे दूनू पाँतिमे समान रूपें बिना हेड़-फेरक आबए। उपरका बला हमर शेरकेँ देखू ऐ मे "लिअ हमरा" समान रुपसँ दूनू पाँतिमे अछि अर्थात ई भेल रदीफ। ई रदीफ गजलक सभ शेरक सभ दोसर पाँतिमे (मतला बला शेरकेँ छोड़ि) अनिवार्य रुपें अएबाक चाही। एकटा आर दोसर मतलाकेँ देखू-

"दूर जतेक जाएब **अहाँ**

लग ओतबे आएब **अहाँ"**

ऐ शेरमे "अहाँ" रदीफ अछि से स्पष्ट अछि। पूरा गजलमे रदीफ एकै होइत छैक।

उपरमे रदीफक जे उदाहरण अछि तकर अलाबे एकटा आर रदीफ होइत अछि जे काफियामे पाओल जाइत छैक। एकरा तहलीली रदीफ कहल जाइत छैक। उर्दूमे तहलीलक मतलब "नीक जकाँ मिझराएल" होइत छैक। ई उदाहरण सभसँ बेसी फड़िच्छ हएत। मानू जे अहाँ कोनो गजलक मतलामे काफियाक रूपमे "चलिऔ" आ "रहिऔ" शब्दक प्रयोग केलिऐ। आब धेआनसँ दूनू शब्दकेँ देखू। दुनूमे "औ" समान रूपसँ छैक आ "औ"क बाद जे बचै छैक से भेल "चलि" आ "रहि"। आ "औ"सँ पहिने दूनू शब्दमे "इ"क मात्रा अछि संगहि-संग "च"क

"र" संग स्वर-साम्य सेहो भऽ रहल छैक। तँ फेर चली तहलीली रदीफपर । "चलिऔ" आ "रहिऔ"मे "औ" भेल तहलीली रदीफ। आब ई शाइरक मजबूरी छैक जे ओ गजलक आन-आन शेरमे काफिया लेल ओहने शब्द लेथि जकर अंतमे "औ" होइक। जेना "कहिऔ", "सुनिऔ", "बजिऔ" इत्यादि। बहुत शाइर एहन-एहन काफियामे " औ" कें काफिया मानि लैत छथि से गलत। तँए शाइर "चलिऔ" आ "रहिऔ" क बाद कोनो शेरमे " हौ", "रौ" इत्यादि काफिया नै लेल जा सकैए (मुदा जँ केओ शाइर मतलामे "चलिऔ" आ " हौ" काफियाक प्रयोग करै छथि तँ गजलक काफिया "औ" स्वर होइत अछि आ एहन स्थितिमे "रौ" आदि काफिया लेल जा सकैए। एकर बेसी विवरण मात्रा बला काफियाक खंडमे भेटत। आब मैथिलीमे तहलीली रदीफक महत्व ऐलेल छैक जे मैथिलीमे विभक्ति सभकें सटा कऽ लिखल जाइत अछि (बहुत गोटें शब्दक अंतमे "औ" क बदलामे "यौ"क प्रयोग करैत छथि। तथापि एहनो स्थितिमे "यौ" तहलीली रदीफ अछि)। एकटा आर गप्प मैथिलीमे एहन शब्द जे "इकारान्त" अछि ओकर उच्चारण अलग होइत अछि मने लिखलो पहिने जाइए आ बाजलो पहिने जाइए जेना लिखै तँ छी "माटि" मुदा बाजै छी "माइट", लिखै छी "देखि" मुदा बाजै छी "देइख" एकर आन-आन सभ उदाहरण सभ सेहो अछि। मैथिलीमे तहलीली रदीफक महत्व ऐ द्वारें सेहो अछि। तँए मैथिलीमे काफिया निर्धारण धेआनसँ करए पड़त आ एकर विस्तृत विवरण काफिया बला प्रकरणमे भेटत।

३) काफिया- काफिया मने तुकान्त।आ तुकान्त मने स्वर-साम्यक तुकान्त चाहे ओ वर्णक स्वर-साम्य हो आकि मात्राक स्वर-साम्य। रदीफसँ पहिने जे तुकान्त होइत छैक तकरा काफिया कहल जाइत छैक। आ ई रदीफे जकाँ गजलक हरेक शेरक (मतला बला शेरकें छोड़ि) दोसर पाँतिमे रदीफसँ पहिने अनिवार्य रुपें अएबाक चाही। काफिया दू प्रकारक होइत छैक-- (क) वर्णक स्वर-साम्य आ (ख) मात्राक स्वर-साम्य। वर्णक काफिया लेल शेरक हरेक पाँतिमे रदीफसँ पहिने समान वर्ण आ तकरासँ पहिने समान स्वर-साम्य होएबाक चाही। एकटा गप्प आर- बहुतो शाइर खाली रदीफक बाद बला वर्ण वा मात्राकें काफिया बूझि लैत छथि से गलत। काफियाक निर्धारण काफिया लेल प्रयुक्त शब्दकें अंतसँ बीच वा शुरू धरि कएल जा सकैए। उदाहरण देखू–

"दूर जतेक जाएब अहाँ

लग ओतबे आएब अहाँ"

ऐ शेरक पहिल पाँतिमे रदीफ "अहाँ" छैक। आ रदीफसँ ठीक पहिने "जाएब" शब्द छैक | जँ अहाँ "जाएब" शब्दपर धेआन देबै तँ पता लागत जे ऐ शब्दक अंतिम वर्ण "ब" छैक मुदा ऐ "ब" संग "आएब" ध्वनि सेहो छैक। तहिना दोसर पाँतिमे रदीफ "अहाँ"सँ पहिने "आएब" शब्द अछि। आब फेर अहाँ सभ "आएब" शब्दकें देखू। ऐमे अंतिम वर्ण "ब" तँ छैके संगहि-संग "आएब" ध्वनि सेहो छैक। मतलब जे उपरक शेरक दुनू पाँतिमे रदीफ "अहाँ"सँ पहिने ब वर्ण अछि, "आएब" स्वर (ध्वनि) क संग। अर्थात "आएब" ध्वनिसँ युक्त "ब" वर्ण ऐ शेरक काफिया भेल। आब ऐठाम ई मोन राखू जे जँ उपरक ई दूनू शेर कोनो गजलक मतला छैक तँ ओइ गजलक सभ शेरक काफिया "ब" वर्णक संग "आएब" ध्वनि होएबाक चाही। अन्यथा ओ गजल गलत भऽ जाएत। आब ऐ गजलक दोसर शेरकें देखू--

"जँ खसब हम बाट पर

आशा अछि उठाएब अहाँ"

ऐ शेरमे पहिल पाँतिमे ने रदीफ छैक आ ने काफिया, मुदा दोसर पाँतिमे रदीफ सेहो छैक आ रदीफसँ पहिने शब्द " उठाएब" अछि। ऐ शब्दक अंतमे "ब" वर्ण तँ छैके संगहि-संग "ब"सँ पहिने "आएब" ध्वनि सेहो छैक। ऐ गजलक आन काफिया सभ अछि--------"नहाएब", "देखाएब" आ "हटाएब"। एकटा आर उदाहरण देखू-

"मालक खातिर तँ माल-जाल बनल लोक

देखाँउसक खातिर कंगाल बनल लोक"

ऐ मतलाक शेरमे "बनल लोक" रदीफ अछि। आ रदीफसँ पहिने पहिल पाँतिमे "जाल" शब्द अछि। संगहि-संग दोसर पाँतिमे "कंगाल" शब्द अछि। आब हमरा लोकनि ऐ मे काफिया निर्धारण करी। दूनू शब्दकें नीक जकाँ देखू। दुनू शब्दक अंतिम वर्ण "ल" अछि मुदा पहिल पाँतिमे "ल"सँ पहिने "आ" ध्वनि अछि (मा) आ दोसरो पाँतिमे "ल"सँ पहिने "आ" ध्वनि अछि (गा)। तँ ऐ दूनू शब्दक मिलानक बाद हमरा लोकनि देखै छी जे दुनूमे "ल" वर्ण समान अछि। संगहि-संग वर्ण "ल" सँ पहिने "आ" स्वर अछि। तँए ऐ गजलक काफिया "आ" स्वरक संग "ल" वर्ण भेल। आब शाइरकें बाँकी शेरमे काफियाक रूपमे एहन शब्द चुनए पड़तन्हि जकर अंतमे "ल" वर्ण अबैत हुअए आ तइसँ पहिने "आ" स्वर हो। ऐ गजलमे प्रयुक्त भेल आन काफिया अछि--दलाल, प्रकाल, जंजाल, देबाल। अच्छा तँ काफियापर भेल एतेक मंथनक बाद एकटा प्रश्न जे जँ कोनो गजल केर मतलामे रदीफक बाद पहिल पाँतिमे " छोड़ए" आ दोसर पाँतिमे "फोड़ए" शब्द आबि रहल हुअए तँ

कहू जे ऐ मे काफिया की हेतै। आ दोसर प्रश्न जे जँ कोनो शाइर " छोड़ए" आ "फोड़ए"क बाद आन शेरमे काफियाक रूपमे " जाए" शब्द लेथि तँ ओ सही हेतै की गलत। ऐ प्रश्नपर विचारु, हम अपन विचार काफियाक विवरणक बाद देब। एक बेर फेर हम अहाँ सभकेँ मोन पाड़ि दी जे काफियाक निर्धारण खाली मतलामे होइत छैक, आ बाँकी शेरमे ओकर पालन। संगहि-संग इहो मोन राखू जे जँ गजलक मतलामे काफिया गलत भेल हुअए तँ ओकरा छोट गलती मानल जाइत छैक, मुदा जँ मतलामे सही काफिया छैक आ बाँकी शेरमे सँ कोनो शेरमे काफियाक गलत पालन भेल छैक तँ ओकरा बड़का गलती मानल जाइत छैक। काफिया निर्धारण करबा समयमे दूटा आर गप्प मोन राखू--

१) जँ मतलाक कोनो काफियामे अनुस्वारक प्रयोग छैक तँ सभ शेरक काफियामे अनुस्वार हेबाक चाही ओहो ठीक ओही स्थानपर जइपर पहिल काफियामे छैक। जेना मानि लिअ कोनो मतलाक पहिल पाँतिक काफिया "बसंत" छैक तँ आब अहाँकेँ ओहन शब्द काफियामे देबए पड़त जकर अंतसँ दोसर वर्णपर अनुस्वार अबैत होइक जेना की "अनंत", "दिगंत" इत्यादि। आ एहने सन नियम चंद्रबिंदु लेल सेहो छैक। अनुस्वार बला काफियामे एकटा आर गप्प मोन राखू जे बहुत गोटे अनुस्वार बला शब्दकेँ संयुक्ताक्षर (मैथिलीमे पंचमाक्षर) रूपमे सेहो लिखैत छथि। जेना की "बसंत" क बदलामे "बसन्त", "अनंत" क बदलामे "अनन्त" वा "दिगंत" क बदलामे "दिगन्त"। मुदा एहन ठाम ई मोन राखू जे एक गजलमे या तँ अहाँ अनुस्वार लऽ सकैत छी वा संयुक्ताक्षर। जँ अहाँ एकटा काफिया अनुस्वार बला लेबै आ दोसर संयुक्ताक्षर तँ ई गलत हएत। उदाहरण लेल "बसंत" क काफिया "अनन्त" वा "दिगन्त" नै भऽ सकैत अछि। हँ " बसन्त" क काफिया "अनन्त" वा "दिगन्त" जरूर होइत छैक। आ से ऐ द्वारे जे संयुक्ताक्षर बला काफिया लेल किछु आर निअम छैक। जकर विवरण निच्चा देल जा रहल अछि।

२) आब कने संयुक्ताक्षर बला काफियाकेँ देखी। किछु आर विवरणसँ पहिने किछु संयुक्त शब्द सभकेँ देखल जाए। प्रस्थान, चुस्त, दुरुस्त, किस्मत। आब ई देखू जे संयुक्त वर्ण अंतसँ कोन स्थानपर पड़ैत अछि। जँ ई अंतसँ तेसर आ ओकर बाद मने चारिम या पाँचम स्थानपर अबैत हो तँ काफियाक निअम पहिने जकाँ हएत। मुदा जँ इएह संयुक्त वर्ण काफियाबला शब्दक अंतसँ दोसर स्थानपर अबैत हो तँ कने धेआन देबए पड़त। मानि लिअ जे मतलाक पहिल पाँतिमे "चुस्त" काफिया छैक। तँ आब सभ काफियाक अंतमे "स्त" रहबाक चाही। उदाहरण लेल "चुस्त"क काफिया "मस्त" ',पस्त" , "हरस्त" आदि भऽ सकैए। उदाहरण रूपमे एकटा शेरकेँ देखल जाए-

हएत कोना गुदस्त जीबन

भेल चिन्तासँ हरस्त जीबन

आब ऐ शेरमे रदीफ "जीबन" भेल आ पहिल पाँतिमे काफिया "गुदस्त" अछि, आब संयुक्ताक्षर बला नियमक हिसाबेँ काफियाबला शब्दमे अंतसँ दोसर वर्ण "स्त" होएबाक चाही। आब दोसर पाँतिकेँ देखू, रदीफसँ पहिने काफियाक रूपमे "हरस्त" अछि जकर अंतसँ "स्त" अछि जे निअमक मोताबिक सही अछि। ऐ गजलमे आन काफिया सभ एना अछि---- "व्यस्त", "मदमस्त", "मस्त", "सस्त" आदि। संयुक्ताक्षरक ई निअम मात्राबला काफिया लेल कने अलग ढ़ंगसँ छैक। किछु विस्तृत विवरण मात्रा बला खंडमे भेटत।

मात्रा बला काफियापर विचार करबासँ पहिने कनेक फेरसँ तहलीली रदीफ आ मैथिली विभक्तिपर विचार करी। कारण जे मैथिली विभक्ति मूल शब्दमे सटि जाइत छैक। आ तँए ओ केखन काफियाक रूप लेत आ केखन रदीफक से बुझनाइ परम जरूरी।

विभक्ति---

मैथिलीमे विभक्ति चिन्ह सामान्यतः पाँच गोट अछि।

कर्म---- केँ करण--- एँ /सँ अपादान–सँ सम्बन्ध---क अधिकरण--मे /पर

एकर अतिरिक्त विद्वान लोकनि कर्ताक चिन्हकेँ सुन्नाक रूपमे लैत छथि। ई पाँचो चिन्ह मूल शब्दमे सटि जाइत छैक। आ ऐ पाँचोमेँसँ "एँ" चिन्ह मूल शब्दक ध्वनि बदलि दैत छैक। उदाहरण लेल देखू-- "बाट" शब्दमे "एँ" चिन्ह सटने " बाटेँ" होइत छैक। "हाथ" शब्दमे सटने "हाथैँ" इत्यादि। आब कने ई विचारी जे जँ कोनो शाइर एहन शब्द, जइमे विभक्ति सटल होइक, जँ ओकर काफिया बनेता तँ की हेतै। ऐ लेल किछु एहन शब्द ली जइमे विभक्ति सटल होइक। उदाहरण लेल--

<u>मूल शब्द</u>———————— **<u>विभक्तिसँ सटल शब्द</u>**

हाथ------------------ हाथक /हाथैँ/ हाथसँ/ हाथमे/ हाथकेँ

फूल------------------ फूलक /फूलसँ /फूलेँ

संग------------------ संगमे /संगेँ

राति------------------ रातिएँ/ रातिसँ /रातिमे

ऐ विवरणकेँ हमरा लोकनि दू भागमे बाँटि सकै छी---

१) एहन मूल शब्द जे अंतसँ अकारान्त हुअए, आ

२) एहन मूल शब्द जकर अंतमे मात्राक प्रयोग होइक

१) आब जँ कोनो शाइर एहन मूल शब्द जे अकारान्त छैक आ ओइमे विभक्ति लागल छैक तकरा काफिया बनबै छथि तँ हुनका ई मोन राखए पड़तन्हि जे बादमे आबए बला सभ आन-आन काफियामे वएह विभक्ति कोनो आन मूल शब्दमे आबै जे अकारान्त होइक संगहि-संग स्वर-साम्य सेहो रखैत हो ।
उदाहरण लेल-----

मानू जे केओ मूल "हाथ" शब्दमे "क" विभक्ति जोड़ि "हाथक" काफिया बनेलक। दोसर आन-आन काफिया लेल ई मोन राखू जे आबए बला ओइ काफियाक अंतमे "क" विभक्ति तँ एबै करतै मुदा विभक्ति "क"सँ ठीक पहिने अकारान्त वर्ण एवं स्वर-साम्य होएबाक चाही जेना की मानू "बात" शब्दमे विभक्ति "क" जुटलापर "बातक" शब्द बनैत अछि। आब पहिल काफिया "हाथक" आ दोसर काफिया "बातक" मिलान करु (काफियाक मिलान सदिखन शब्दक अंतसँ कएल जाइत छैक)। देखू पहिल काफिया "हाथक" आ दोसर काफिया "बातक" दुनूक अंतमे विभक्ति "क" अछि संगहि-संग विभक्ति "क" केर बाद दुनू काफियाक शब्द "थ" आ "त" अकारान्त अछि संगहि-संग "हा" केर स्वर-साम्य "बा"सँ छैक। आब फेर तेसर शब्द "पात" लिअ आ जँ ओइमे "क" विभक्ति जोड़बै तँ " पातक" शब्द बनतै। आब पहिल काफिया "हाथक" आ दोसर काफिया "पातक" मिलान करु। देखू अंत सँ दूनू शब्दमे "क" विभक्ति छैक आ ठीक ओइसँ पहिने दूनू शब्द अकारान्त छैक आ संगहि-संग 'हा"क स्वर-साम्य "पा"सँ छैक। एनाहिते दोसर उदाहरण देखू----मूल शब्द "पात" विभक्ति "मे" जुटलापर "पातमे" शब्द बनैत अछि। फेर दोसर शब्द "बाट" विभक्ति "मे" जुटलापर "बाटमे"। आब फेरसँ मिलान करु--- दुनू शब्दक अंतमे विभक्ति "मे" लागल छैक । विभक्ति "मे"सँ ठीक पहिने अकारान्त वर्ण सेहो छैक संगहि-संग "पा" केर स्वर-साम्य "बा"सँ छैक। किछु आर उदाहरण लिअ---- "कलमसँ"-----"पतनसँ", "बापकेँ"-----"आबकेँ" इत्यादि।

२) एहन मूल शब्द जकर अंतमे मात्रा होइक ओकर काफिया लेल धेआन राखू जे विभक्तिक बाद ठीक वएह मात्रा स्वर-साम्यक संग एबाक चाही। उदारहरण लेल--

आँखिसँ----चाँकिसँ----बाँहिसँ, इत्यादि

रातिमे----जातिमे--- जाठिमे, इत्यादि

घुटठीकेँ---गुड़डीकेँ---चुट्टीकेँ, इत्यादि

पानिक--आनिक, इत्यादि

केखनो काल दूटा विभक्ति एकै संग जुटि जाइत छैक जेना "रातिएँसँ" एहन समयमे अहाँकेँ दोसरो काफिया ओहने लेबए पड़त जइमे दुनू विभक्ति समान होइक स्वर-साम्यक संगे। उदाहरण लेल " रातिएँसँ" केर काफिया "छातिएँसँ" "हाथिएँसँ" "बाटिएँसँ" आदि-आदि भऽ सकैत अछि। विभक्ति बला काफियाक संबंधमे एकटा आर खास गप्प। कोनो एहन मूल शब्द जकर अंत कोनो एकटा खास विभक्तिसँ साम्य रखैत हो, विभक्तिसँ पहिने बला वर्ण अकारान्त वा मात्रा युक्त (जेहन स्थिति) हुअए संगहि-संग ओइसँ पहिने स्वर-साम्य हुअए तँ ओ दुनू काफियाक रूपमे लेल जा सकैए। उदाहरण लेल एकटा विभक्ति बला शब्द "पातक" वा "बाटक" लिअ। आ आब एहन मूल शब्द ताकू जकर अंतमे "क" होइ, "क"सँ पहिने अकारान्त वर्ण होइक (जँ अकारान्त वर्णसँ पहिने स्वर-साम्य होइ तँ आरो नीक) तँ ओ दुनू (एकटा विभक्ति युक्त आ दोसर मूल) शब्द काफिया भऽ सकैत अछि। उदाहरण लेल उपर लेल दूनू विभक्त युक्त शब्द "पातक" आ "बाटक"क मूल शब्द "बालक" पालक" वा "चालक"सँ मिलाउ। जँ गौरसँ देखबै तँ पता लागत जे ई शब्द सभ काफिया लेल एकदम्म उपयुक्त अछि। तेनाहिते मात्राबला शब्द जइमे विभक्ति सटल हुअए आ ओहन मूल शब्द जे ओकरासँ मिलैत हुअए एक-दोसराक काफिया बनि सकैत अछि। जँ कोनो मतलाक अंत मूल शब्दसँ सटल विभक्तिसँ होइक हुअए तँ ओकरा बिना रदीफक गजल मानू। उदाहरण लेल-

भरोसे टा भेटल सेहो उधारमे

लागल छी हम दोसरे जोगारमे

ऐ गजलक आन अंतिम शब्द अछि---- "अन्हारमे", अनचिन्हारमे", "धारमे"। देखू ऐ सभमे "र" सेहो आ "मे" सेहो छैक मुदा तैओ एकरा बिना रदीफक गजल मानल जाएत।

आब कने मात्रा बला काफियापर विचार करी। मैथिली वर्णमालामे १६ गोट स्वर देखाओल गेल अछि। अ, आ, इ, ई उ, ऋ, ॠ, लृ,(आ लृक आर एकटा दीर्घ रूप) ऊ, ए, ऐ. ओ. औ, अं एवं अः। जइमे "अ" तँ सभ वर्णक (जइमे हलन्त नै लागल होइक)मे अंतमे अबिते छैक। अन्य छह गोट स्वर (ऋ,ॠ, लृ आ लृक आर एकटा दीर्घ रूप, अं एवं अः) खाली तत्सम शब्दमे अबैत छैक। बचल नओ गोट स्वर आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, एवं औ (एकर लेख रूप क्रमशः--ा, ि, ी, ु, ू, े, ै, ो एवं ौ अछि) |संगे-संग हम मैथिलीमे रेफ बला काफियापर सेहो बिचार करब। मतलब जे ऐठाम हम कुल दस गोट मात्रापर बिचार करब। मुदा ऐ दसोमे "इ", " उ" आ रेफ पर बिचार हम बादमे करब। एकर कारण जे मैथिलीमे ऐ तीनूक उच्चारण कने अलग ढंगसँ होइत अछि। तँ चली मात्रा बला काफियापर। मतलामे रदीफसँ पहिने जँ वर्णमे कोनो मात्रा छैक। तँ गजलक हरेक शेरक काफियामे वएह मात्रा अएबाक चाही चाहे ओइ मात्राक संग बला वर्ण दोसरे किएक ने हो। बाद-बाँकी स्वर-साम्य बला निअम उपरे जकाँ बूझू। इएह भेल मात्रा बला काफियाक निअम। आब एकरा कने उदाहरणसँ बूझी।

देखू नोर सुखा रहल

दर्द मुदा देखा रहल"

ऐ शेरमे रदीफ अछि "रहल" आ रदीफसँ पहिने पहिल पाँतिमे वर्ण "ख"क संग "आ"क मात्रा अछि। तेनाहिते दोसर पाँतिमे रदीफसँ पहिने वर्ण "ख"क संग "आ"क मात्रा अछि। ऐ गजलमे लेल गेल अन्य काफिया अछि---"गना", बिझा", "फेका" एवं "लिखा" । जँ गौरसँ देखबै तँ पता लागत जे रदीफसँ पहिने बला वर्ण बदलि रहल छैक (खाली मतलामे एकै छैक "ख" मुदा आन शेर सभमे ई "न", "झ", "क" आ फेर "ख" अछि) मुदा मात्रा सभमे एकै "आ" ("आ" केर लेख रूप ा) छैक। अर्थात ऐ गजलक काफिया भेल "आ"क मात्रा। अन्य बचल मात्राक लेल एहने समान निअम अछि आ सभ मात्राक एक-एकटा उदाहरण देल जा रहल अछि।

१) "एनाइ जँ अहाँक सूनी हम

नहुँएसँ सपना बूनी हम"

(काफिया "ई"क मात्रा)

ऐ गजलक अन्य काफिया अछि---- "चूमी", "पूछी", "बूझी", "खूनी", ,"लूटी", "सूती" आदि।

२) "जँ तोड़ब सप्पत तँ जानू अहाँ

फाँसिए लगा मरब मानू अहाँ"

(काफिया "ऊ"क मात्रा)

ऐ गजलमे लेल गेल अन्य कफिया --- "गानू", "आनू", बान्हू" आदि।

३) "मोन तंग करबे करतै

देह भाषा पढबे करतै"

(काफिया "ए"क मात्रा)

ऐ गजलमे लेल गेल अन्य कफिया ---"खुजबे", "उड़बे", "सटबे" आदि अछि।

४) "सभ दिन तँ भेँट होइते रहै छी हम

तैऔ भोर आ साँझक बाट जोहै छी हम"

(काफिया "ऐ"क मात्रा)

ऐ गजलमे लेल गेल अन्य कफिया ---"सोहै", "भूकै", "लूटै", "बूझै" आदि अछि।

केखनो काल "ऐ" केर उच्चारण "अइ" जकाँ होइत अछि। जेना "सैतान" बदलामे सइतान, बैमानक बदलामे "बइमान" इत्यादि।

५) ‘‘आब हरजाइकें तों बिसरि जो रे बौआ

मोन ने पड़ौ एहन सप्पत खो रे बौआ

(काफिया "ओ"क मात्रा)

ऐ गजलमे लेल गेल अन्य कफिया------ओ, खसो, पड़ो इत्यादि अछि।

६) " एक बेर फेर हँसिऔ कनेक

ओही नजरि सँ देखिऔ कनेक"

(काफिया "औ"क मात्रा)

ऐ गजलमे लेल गेल अन्य कफिया ---"रहिऔ", "चलिऔ", "बुझबिऔ" आदि अछि।

**** केखनो काल "औ" केर उच्चारण "अउ" जकाँ होइत अछि।

उम्मेद अछि जे उपर देल गेल सात प्रकारक मात्रा बला उदाहरणसँ काफिया संबंधी निअम बेसी फड़िच्छ भेल हएत। तँ आब चली "इ", "उ" आ रेफ पर। मैथिलीमे "इ" आ "उ" लेख आ उच्चारण दूनू पहिने लिखल आ कएल जाइत छैक। एकरा हम उदाहरणसँ देखाएब, तँ पहिने "इ" केर उदाहरणसँ शुरु करी। शब्द "राति" मुदा ओकर उच्चारण भेल "राइत", लिखल जाइए "गानि" मुदा बाजल जाइए "गाइन", तेनाहिते "पानि" केर उच्चारण "पाइन" भऽ गेल। मैथिलीमे वर्ण "इ" तेहन उत्फाल मचेलक जे बहुत आन शब्द सभ "इ" वर्णक संग लिखल जाए लागल जेना की "जाइत", "खाइत" आदि। एकटा आर महत्वपूर्ण गप्प, मैथिलीमे "इ"कार दू रूपमे प्रयोग होइत अछि- पहिल रूप भेल जइमे मात्रा अबैत अछि आ दोसर रूपमे "इ"कार वर्णक रूपमे अबैत अछि। पहिल रूपक उदाहरण "राति", "जाति" सभ भेल आ दोसर रूपक उदाहरण "जाइत", खाइत" सभ भेल आब कने हमरा लोकनि काफियापर आबी। जँ अहाँ कोनो एहन शब्दक काफिया बना रहल छी जकर अंतिम वर्ण "इ"कार युक्त अछि तँ अहाँकें आन-आन काफिया लेल "इ"कार युक्त वएह वर्ण लेबए पड़त जे पहिल काफियामे अछि। उदाहरण लेल जँ अहाँ "राति" शब्द काफिया लेल लेलहुँ तँ आब अहाँकें दोसर काफिया लेल "त" वर्ण "इ"कार युक्त हेबाक चाही। जेना की "पाँति", "जाति", आदि। अथवा एहन शब्द लिअ जकर अंतमे "त" होइक आ तइसँ पहिने "इ" वर्णक रूपमे रहए जेना की "जाइत"। एकर मतलब जे "राति" शब्दक काफिया लेल "जाति", "पाँति" क संगे "जाइत", "खाइत", "नहाइत" सेहो आबि सकैत अछि। आ हमरा जनैत एहीठाम मैथिली गजल उर्दू गजलसँ पूर्णतः अलग भऽ जाइत अछि। आ संगहि-संग ई विशेषता मैथिली गजलक एकटा अपन अलग छवि बनबैत अछि। आ ई विशेषता ह्रस्व "उ", "ऐ’’, "औ" आ रेफ बलामे सेहो अबैत अछि।

आब कने ह्रस्व "उ" पर धेआन दी। मैथिलीमे जँ शब्दक अंतमे "उ" अबैत हुअए आ ठीक ओइसँ पहिने अकारान्त वर्ण हुअए तखन "उ" केर उच्चारण प्रायः औ/अउ जकाँ होइत अछि। उदाहरण लेल मधु शब्दक उच्चारण मौध/मअउध होइत अछि। आ जँ "उ"सँ पहिने आकारान्त वर्ण हो तखन "इ"ए जकाँ "उ" केर उच्चारण पहिने होइत अछि। उदाहरण लेल "साधु" केर उच्चारण "साउध", "बालु" केर उच्चारण "बाउल" इत्यादि। ओना उच्चारण लेल आनो शब्द लेल जा सकैए। आब ई देखी जे ऐ प्रकारक शब्दक काफिया कोना बनतै। जँ अहाँ "उ" सँ पहिने अकारान्त बला वर्णसँ बनल शब्द काफिया लेल लैत छी तँ धेआन राखू जे आन-आन काफियाक उच्चारण "कोनो वर्ण(एक वा एकसँ बेसी) + औ/अउ + अंतिम निश्चित वर्ण" आबै। आब उपरके बला शब्द "मधु"कें लिअ। एकर उच्चारण "म + औ/अउ + ध" अछि, तँए एकर दोसर काफिया "कोनो वर्ण(एक वा एकसँ बेसी) + औ/अउ + ध" हेतै। आब जँ अहाँ दोसर शब्द "पौध" लेलहुँ, तँ एकर उच्चारण "प + औ/अउ + ध " अछि। अर्थात "मधु" केर उच्चारण "पौध" केर बराबर अछि। तँए "मधु" केर काफिया "पौध" हएत। एनाहिते आन-आन शब्द सभ काफियाक लेल ताकल जा सकैए। आब आबी ओहन शब्दपर जकर अंत "उ" होइक आ ठीक ओइसँ पहिने आकारान्त वर्ण होइक (जेना की उपरमे एकर उच्चारण पद्धित देखा देल गेल अछि, तँए सोझे काफियापर चली)। ठीक ह्रस्व "उ" जकाँ निअम छैक एकरो। मानि लिअ जँ अहाँ "बालु" शब्द लेलहुँ, तँ मोन राखू दोसर काफियाक उच्चारण " आकारान्त कोनो वर्ण + उ + ल" होइक जेना की "भालु" इत्यादि। संगहि-संग ह्रस्व "इ"ए जकाँ "चाउर" केर काफिया "चारु" एवं "बालु" केर काफिया "आउल" (owl) भऽ सकैत अछि। मैथिलीमे बहुत काल "उ" आ चन्द्रबिंदु एकै संग अबैत अछि। जेना " कहलहुँ" ,"सुनलहुँ", "रहलहुँ" आदि। मानि लिअ जँ ई शब्द सभ जँ काफियाक रूपमे आबि रहल अछि तँ एहन समयमे धेआन राखू जे काफियामे ठीक वहए वर्ण "उ" आ चन्द्रबिंदुक

संग आबए। से नै भेलापर काफिया गलत भऽ जाएत। उपरमे देल तीनू शब्दकँ देखू । तीनू शब्दक अंत " ह" सँ अछि ओहो "उ" आ चन्द्रबिंदुक संग। मने ई तीनू काफिया लेल उपयुक्त अछि।

आब हमरा लोकनि फेरसँ एकबेर संयुक्ताक्षर बला निअमपर चली। मात्रा बला संयुक्ताक्षर लेल पहिनेसँ कने अलग ढ़गसँ देखू। ई गप्प उदाहरणसँ बेसी फड़िच्छ हएत। मानू जे मतलाक पहिल पाँतिमे काफियाक रूपमे "चुट्टी" शब्द लेल गेल। आब दोसर काफिया लेल मोन राखू जे "ई" मात्रा युक्त कोनो शब्द भऽ सकैत अछि। उदाहरण लेल "चिन्नी", "बुच्ची" आदि "चुट्टी"क काफिया भऽ सकैत अछि। मुदा जँ मतलाक काफिया "चुट्टी" आ "घुट्टी" छैक तखन आन शेरक काफिया "चिन्नी" या "बुच्ची" नै भऽ सकैत अछि। कारण मतलाक दुनू काफियामे "ई" मात्रा युक्त वर्णक बाद आधा "ट्" क प्रयोग छैक, तएँ आन शेरक काफिया लेल ओहन शब्द ताकू जइमे "ई"मात्रा युक्त अक्षरक बाद आधा "ट्" अबैत हो जेना "बुट्टी", "कुट्टी" इत्यादि।

एकटा गप्प आर जे शाइर जे अनुस्वारक बदलामे पंचमाक्षरक प्रयोग करैत छथि से धेआन राखथि जे काफियाक निर्धारण उपरके निअमक हिसाबे होइक।

आघात बला शब्दक काफिया---

मैथिलीमे दू प्रकारक आघात अछि मात्रात्मक आ बलाघात। मुदा मात्रात्मक आघात ओतेक महत्व नै रखैत अछि, तँए हम एतए खाली बलाघातपर बिचार करब।

मैथिलीमे कोन शब्दमे कतए आघात पड़त तकरा देखल जाए----पहिने मात्रात्मक आघातकँ देखू।

१) दू वर्ण धरि बला एहन शब्द जइमे एकौटा गुरू वर्ण नै हो- एहन शब्दमे अंतसँ दोसर शब्दपर आघात पड़ैत छैक। जेना "घर", "बर"। एकर उच्चारण "घ|र", "ब|र" आदि होइत अछि। मतलब "घ" आ "ब" पर आघात पड़ल छैक। जँ एक या एकसँ बेसी दीर्घ हुअए तँ पहिल दीर्घपर आघात पड़ैत छैक।

जेना "हाथ", "खत्ता" आदि।मतलब "हा" आ "त्ता" पर आघात छैक। "हाथी" "माछी" । ऐ शब्द सभमे पहिल गुरू "हा" एवं "मा" पर आघात छैक।

२) तीन वर्ण बला एहन शब्द जइमे तीनू लघु वर्ण हो---- एहन शब्दमे अंतसँ दोसर वर्णपर आघात पड़ैत छैक। जेना "तखन", अगहन" । ऐमे "ख" आ "ह" पर आघात छैक। जँ एक या एकसँ बेसी दीर्घ हुअए तँ पहिल दीर्घपर आघात पड़ैत छैक। जेना "ओसारा"मे "ओ" पर आघात छैक। "बतासा" मे "ता" पर आघात छैक।

३) चारि वर्ण बला शब्दमे अंतसँ दोसर वर्णपर आघात पड़ैत छैक। उदाहरण लेल "भिनसर" मे "स" पर आघत छैक, "अगहन" मे "ह" वर्णपर छैक। जँ चारि वर्ण बला ओहन शब्द जइमे दीर्घ सेहो छैक तकर आघात उपरमे देल गेल आने निअम जकाँ अछि। जेना "उच्चारण" मे च्चा पर आघात छैक।

कुल मिला कऽ एकसँ चारि वर्ण धरिक शब्द लेल एकै रंगक निअम अछि।

७) पाँच वर्ण बला शब्दमे अंतसँ तेसर वर्णपर होइत छैक चाहे ओ लघु हो की दीर्घ। मने पाँच वर्णमे आघात सदिखन बीच बला वर्णपर पड़ैत छैक।उदाहरण लेल "देखलहक" मे अंतसँ तेसर वर्ण "ल" पर आघात छैक, तेनाहिते "कमरसारि" मे "र" पर आघात छैक, "कनपातर" मे "पा" पर आघात छैक।

८) छह आ छहसँ बेसी वर्ण बला शब्दमे दू ठाम आघात पड़ैत छैक। शब्दक अंतसँ दोसर वर्णपर आ अंतेसँ चारिम वर्णपर चाहे ओ लघु हो की दीर्घ। ऐठाम इहो मोन राखू जे शब्दक अंतसँ दोसर वर्णपर पड़ल आघात बेसी कठोर मुदा चारिम स्थानपर पड़ल आघात मन्द होइत अछि।

**** विभक्ति बला शब्दमे आघात निर्धारित करबाक लेल विभक्तिकँ हटा कऽ गणना करु। जेना की "पातक" शब्दमे आघात गणना "त" वर्णसँ शुरु हएत ने की अंतिम वर्ण "क" सँ। सभ विभक्ति जुटल शब्द लेल इएह मोन राखू।

आब कने आघात बला शब्दक काफिया देखी। एहन ठाम ई मोन राखू जे आघात बला स्थान आ वर्णक मात्रा समान रहए। उदाहरण लेल "घर" आ "मजूर" दूनूमे दोसर स्थानपर आघत छैक मुदा मात्रा अलग-अलग छैक, तँए ई दुनू एकदोसराक काफिया नै बनि सकैए। तँ "घर" शब्दक काफिया लेल "बर", "तर", " हर", ‘‘भिनसर" आदि उपयुक्त रहत । आ "मजूर" लेल "मयूर", "हजूर" आदि उपयुक्त रहत। आनो-आन आघातबला शब्दक काफिया लेल इएह नियम बुझू। ऐठाम हम फेर मोन पाड़ी जे काफियाक निर्धारण खाली मतलामे होइत छैक

आ बाँकी शेरमे ओकर पालन। तँए जँ केओ मतलामे विभक्ति बला शब्दकेँ "फूलक" आ हाथक" काफिया लेताह तँ सही हएत आ बादबाँकी शेरमे "अक" काफियाक प्रयोग हेतैक। मुदा जँ केओ गोटे मतलामे "फूलक" आ "अड़हूलक" लेलक आ तकरा बादक शेरमे "हाथक" प्रयोग करत तँ ओ बिल्कुल गलत हएत। "फूलक" आ "अड़हूल" बाद आन शेर लेल काफिया "ूलक" होएबाक चाही।

आब कने "रेफ" बला काफिया पर बिचार करी। रेफ "र" वर्णक एकटा रूप अछि।जे "र्" मने आधा "र्" मानल जाइत अछि। मैथिलीमे रेफ आ ओकर पूर्ण रूप (र वर्ण) दूनू चलैत अछि | मुदा ई जनबाक लेल जे कतए रेफक रुप रहत आ कतए "र" वर्णक ऐ लेल किछु उदाहरण देखी------

मर्द------ मरद

बर्खा-----बरखा

बर्ख-----बरख

चर्चा----चरचा

ऐ चारि गोट शब्दकेँ देखलासँ ई बुझाइत अछि जे जँ अकारान्त वर्णपर रेफ हुअए तँ ओकरा लेल पूर्ण "र" क लिखब बेकार बुझाइत अछि कारण जे लिखलो जाइत अछि "बर्ख" आ पढ़लो जाइत अछि "बर्ख"। तँए ई मोन राखू जे अकारान्त वर्णपर जँ रेफ हुअए तँ ओकरा "र" क रुपमे नै लिखल जाए। मुदा जँ कोनो वर्ण मात्रायुक्त हुअए संगहि-संग रेफ युक्त हुअए तँ ओइ शब्दमे "र" वर्णक प्रयोग कएल जा सकैए। जेना की चर्चा क चरचा, बर्खा क बदला मे बरखा, फुर्ती केर बदलामे फुरती इत्यादि।

आब जँ अहाँ रेफ बला शब्दक काफिया बना रहल छी तँ पहिने ई निश्चित करू जे अहाँ रेफक रूप लेबै या "र" वर्णक। जँ अहाँ रेफक रूप लेबै तँ मोन राखू जे एकर निअम "इ"कार बला काफियाक समान हएत। हमर कहबाक मतलब जे जँ अहाँ मतलाक पहिल पाँतिमे काफिया "गर्दा" लेलहुँ आ तकरा बाद आन काफिया बर्खा या बरखा लेलहुँ तँ बिलकुल गलत हएत। "गर्दा" शब्दक काफिया लेल दोसरो शब्दक अंतसँ "द" वर्ण रेफ लागल हेबाक चाही। मुदा जँ अहाँ मतलाक पहिल पाँतिमे काफिया "बरखा" लेलहुँ तँ ओकर काफिया "परदा", "गरदा", "जरदा" आदि भऽ सकैत अछि। तेनाहिते ई मोन राखू जे जँ रेफ शब्दक अंत छोड़ि (शुरूमे वा बीचमे कतौ) छैक तँ संस्कृतक शब्दमे तँ रेफे रहत मुदा विदेशज खास कऽ अरबी-फारसी आ उर्दू बला शब्दमे "र" भऽ जाइत अछि। जेना की पर्वतकेँ " परवत" नै लिखल जा सकैए मुदा शर्बतकेँ " शरबत" जरूर लीखि सकैत छी। ऐठाम ई मोन राखू पर्वत आ शरबत दुनू एकदोसराक काफिया भऽ सकैए।

काफियाक संबंधमे एकटा गप्प आर- काफियामे वर्ण "र" केर उच्चारण "ड़" क बराबर मानू संगहि-संग "स", "श" आ "ष" केर उच्चारण सेहो समान मानू। जाहिठाम "ष"क उच्चारण "ख" जकाँ हएत ततए पूर्ण "ख" काफियाक रूपमे आबि सकैत अछि। जँ "ढ" अक्षर शब्दक शुरूमे छैक तँ ओकर उच्चारण "ढ" जकाँ होइत छैक मुदा तकरा बाद ओकर उच्चारण "रह्" जकाँ छैक। आ हमरा विचारे काफियामे "ढ", "र" एवं "ड़" समान अछि। उदाहरण लेल "ठाढ़"क काफिया "विचार", "हुराड़" आदि भऽ सकैत अछि। केखनो काल "त्र" केर लेख रूप "तर्" आ "क्ष" केर लेख रूप "च्छ" अबैत अछि। शाइर उपरके निअमक हिसाबे एकर काफिया बनाबथि।

आब कने शुरुआत बला प्रश्नपर चली। पहिल प्रश्न छल जे जँ कोनो मतलामे "छोड़ए" आ "फोड़ए" काफिया हुअए तँ बाद बला शेरक काफिया की हेतै। उत्तर स्पष्ट अछि बादबाँकी शेरमे काफिया "ओड़ए" वा "ओरए" हेबाक चाही। नै तँ गजल गलत भऽ जाएत। संगहि-संग दोसर प्रश्न छल जे जँ "छोड़ए" आ "फोड़ए" क बाद "जाए" हुअए, तँ सही हएत की गलत। एकरो उत्तर स्पष्ट अछि---- जाए क उच्चारण "ओड़ए" वा "ओरए" सँ नै मिलैत अछि तँए "जाए" काफिया "छोड़ए" आ "फोड़ए" क बाद गलत हएत।

४) मकता- गजलक ओइ अंतिम शेरकेँ मकता कहल जाइत छैक जइमे शाइर अपन नाम-उपनाम (तख़ल्लुस)क प्रयोग करथि। जेना एकटा उदाहरण देखू-

"ठकि रहल अनचिन्हारके

कहिओ अहाँ तँ कहिओ हम"

ऐ मे हम अपन उपनाम "अनचिन्हार"क प्रयोग केने छिऐक आ ई शेर गजलक अंतिम शेर छैक तँए ई शेर भेल "मकता"। बिना मकताक गजल सेहो होइत छैक। मकताक संबंधमे ई धेआन राखू जे शाइर अपन सभ गजलमे या तँ अपन नामक प्रयोग करथि वा अपन उपनामक। मने दुनूमे सँ कोनो एकैटा। एकर उदाहरण हम अपनेपर लैत छी। हम अपन गजलमे या तँ "आशीष"क प्रयोग करबै वा

"अनचिन्हार"क। ई नै जे किछु गजलमे "आशीष" आ किछुमे "अनचिन्हार"।

बहर --

गजल सदिखन कोने ने कोने बहरमे होइत छैक। बिना बहरक गजलक कल्पना असंभव। जेना छन्दक आधार लय होइत छैक तेनाहिते बहरक आधार अरूज वा अरूद होइत छैक। अरूज वा अरूद मने शेरमे निहित मात्रा-क्रम। अरूज वा अरूदकें वजन सेहो कहल जाइत छैक। बहरक चर्च आगाँ बढ़एबासँ पहिने एकटा गप्प आर। ऐठाम हम उर्दू बहर केर वर्णन कऽ रहल छी। आ मैथिली गजलमे ई बहर सबहक प्रयोग मैथिली गजलक १००सालक इतिहासमे कहियो नै भेल मुदा हालहिमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा बहरे-मुतकारिबमे सफलतापूर्वक गजल लिखल गेल। तँए आब एकर चर्चा आवश्यक। ओना मैथिलीमे वार्णिक बहरक खोज सेहो गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेल अछि जकर अनुकरण प्रायः हरेक नव गजलकार कऽ रहल छथि। ऐ लेखमे जतेक उदाहरण देल गेल अछि से वार्णिक बहरपर आधारित अछि। ओना ऐ बहरक चर्चा हम बादमे सेहो करब। तँ पहिने उर्दूक बहर देखी।

अरूज वा अरूदक अविष्कार हिजरीक दोसर सदीमे खलीले इब्ने अहमद बसरी केने छलाह। हुनका ई विचार मक्काक ठठेरा बजारमे बर्तन बनेबाक अवाज सूनि अएलन्हि। प्राचीन कालमे मक्काक अरूज वा अरूद सेहो कहल जाइत छलैक तँए बसरी ओइ मात्रा क्रमकें अरूज वा अरूदक नाम देलथि। अरबी साहित्यमे १६ बहरक प्रयोग भेल। बादमे ईरानमे तीन टा बहरक अविष्कार भेल। आब हम ऐठाम बहरक संक्षिप्त परिचय दऽ रहल छी।

अरबी साहित्यमे बहर तीन खंडमे बाँटल गेल अछि १) सालिम मने मूल बहर, २) मुरक्कब मने मिश्रित बहर आ ३) मुदाइफ मने परिवर्तित बहर। ऐ तीनूमेसँ मुदाइफ बहरक चर्चा एखन हम नै करब कारण जखन मैथिलीमे मूल बहरपर गजल लिखले नै गेल अछि तँ कोन हिसाबे हम ओकरा (मुदाइफ बहरकें) एतए प्रस्तुत करू। अरबीमे सालिम मने मूल बहर मे सात टा बहर अबैत अछि। आ मुरक्कबमे बारह टा। बादमे अही बारहकें उलट-फेर करैत आठ टा आर बहर बनाएल गेल। कुल मिला कऽ मुरक्कब बहर बीस टा भेल। हम अपना सुविधा लेल मुरक्कब बहरकें दू खंडमे बाँटि देने छी। संगहि-संग सालिम बहरकें हम "समान बहर" नाम देने छिऐक। आ मुरक्कब बहरक पहिल खंड (जइमे कुल सात टा बहर अछि) तकरा अर्धसमान बहर नाम देलिऐक आ मुरक्कब बहरक दोसर खंड जइमे तेरह टा बहर अछि तकर नाम "असमान बहर" देलिऐ। तँ आब एकर विवरण निच्चा देखू।।

बहरसँ पहिने रुक्नकें बुझी।

संस्कृतक गण जकाँ अरबीमे सेहो होइत ई छैक जकरा "रुक्न" कहल जाइत छैक। ई रुक्न आठ प्रकारक होइत अछि। जकर विवरण एना अछि-------

रुक्नक स्वरूप	मात्रा	रुक्नक नाम	मात्रा क्रम
खमासी रुक्न	५	फऊलुन (फ/ऊ/लुन)	U|| (U/|/|)
खमासी रुक्न	५	फाइलुन (फा/इ/लुन)	|U| (|/U/|)
मूल रुक्न	७	फाइलातुन (फा/इ/ला/तुन)	|U|| (|/U/|/|)
मूल रुक्न	७	मफाईलुन (म/फा/ई/लुन)	U||| (U/|/|/|)
मूल रुक्न	७	मुस्तफइलुन (मुस्/तफ/इ/लुन	||U| (|/|/U/|)
मूल रुक्न	७	मुफाइलतुन (मु/फा/इ/ल/तुन)	U|UU| (U/|/U/U/|)

मूल रुक्न	७	मुतफाइलुन (मु/त/फा/इ/लुन	UU|U| (U/U/|/U/|)
मूल रुक्न	७	मफऊलातु (मफ/ऊ/ला/तु	|||U (|/|/|/U)

* ऐठाम U मने १ मने हस्व आ | मने २ मने दीर्घ भेल | ऐ रुक्न सभकेँ इयाद रखबाक लेल गणितीय रूपसँ एना बुझू-----

a) एकटा लघुक बाद जँ दूटा दीर्घ हुअए तँ ओकरा "फऊलुन" कहल जाइत छैक।

b) एकटा लघुक बाद जँ तीनटा दीर्घ हुअए तँ ओकरा "मफाईलुन" कहल जाइत छैक।

c) जँ "मफाईलुन" केँ उल्टा करबै तँ "मफऊलात" बनि जाएत मने तीनटा दीर्घक बाद एकटा लघु।

d) दूटा दीर्घक बीचमे जँ एकटा लघु रहए तखन ओकरा "फाइलुन" कहल जाइत छैक।

e) "फाइलुन" केर अंतमे जँ एकटा आर दीर्घ जोडबै तँ ओ "फाइलातुन" बनि जाएत।

f) "फाइलातुन" केर उल्टा रूप "मुस्तफइलुन" होइत छैक।

g) शुरुमे एकटा लघु तकरा बाद एकटा दीर्घ तकरा बाद फेर दूटा लघु आ तकरा अंतमे एकटा दीर्घ हुअए तँ "मुफाइलतुन" कहल जाइत छैक।

h) "मुफाइलुन" केर अंतसँ तेसर या दोसर लघु हटा कऽ पहिल लघु लग बैसा देबै तँ "मुतफाइलुन" बनि जाएत। मने शुरुमे दूटा लघु तकरा बाद एकटा दीर्घ तकरा बाद फेर एकटा लघु आ तकरा बाद अंतमे एकटा दीर्घ।

अही आठो रुक्नक हेर-फेरसँ बहर बनैत अछि जकर विवरण निच्चा देल जा रहल अछि।

१) समान ध्वनि--ऐ खंडमे कुल सात गोट बहर राखल जाइत अछि। जकर विवरण एना अछि--------

क) बहरे-हजज- एकर मूल ध्वनि अछि "मफाईलुन" मतलब U-|-|-| (१-२-२-२) मने ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ। ई ध्वनि शाइर अपना सुविधानुसार प्रयोग कऽ सकैत छथि। मतलब कोनो शाइर एक पाँतिमे एक बेर, वा दू बेर वा …… कतेको बेर (बेसीसँ बेसी सोलह बेर) प्रयोग कऽ सकैत छथि मुदा मात्रा-क्रम नै टुटबाक चाही। आ जँ ऐ ध्वनिकेँ शेरक रुपमे देबै तँ एना हेतैक------

U-|-|-|

U-|-|-|

U-|-|-| + U-|-|-|

U-|-|-| + U-|-|-|

U-|-|-| + U-|-|-|

U-|-|-| + U-|-|-|

U-|-|-| + U-|-|-| + U-|-|-| + U-|-|-|

U-|-|-| + U-|-|-| + U-|-|-| + U-|-|-|…………….…….……….…….…

तँ ई भेल बहरे-हजज केर ढ़ाँचा। ऐठाम फेर एक बेर गौरसँ देखू। उपरका ढाँचा सभमे दुनू पाँतिमे मात्रा क्रम एकै छैक। अर्थात ह्रस्व क निच्चा ह्रस्व आ दीर्घ। आ मोन राखू जँ अहाँ बहरे-हजजमे गजल लीख रहल छी तँ सभ शेरक मात्रा क्रम इएह देबऽ पड़त। नै तँ गजल बे-बहर कहाओत।

ख) बहरे-रमल---एकर मूल ध्वनि एना अछि--- फाइलातुन मने ----- |-U-|-|,अर्थात दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ। आब जँ ऐ ध्वनि क शेरमे प्रयोग

करबै तँ एना हेतैक---

|-U-|-| + |-U-|-| + |-U-|-| + |-U-|-|

|-U-|-| + |-U-|-| + |-U-|-| + |-U-|-|

(ऐठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिक उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लऽ कऽ कतेको बेर (बेसीसँ बेसी सोलह बेर) ध्वनिक प्रयोग कऽ सकैत छथि।) ई भेल बहरे-रमल।

ग) बहरे-कामिल--एकर मूल ध्वनि अछि "मुतफाइलुन" मने U-U-|-U-| मने ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ। शेरमे एकर ढाँचा एना छैक------

U-U-|-U-| + U-U-|-U-| + U-U-|-U-| + U-U-|-U-| + U-U-|-U-|

U-U-|-U-| + U-U-|-U-| + U-U-|-U-| + U-U-|-U-| + U-U-|-U-|

(ऐठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिक उदाहरण देलहुँ अछि मुदा शाइर एकसँ लऽ कऽ कतेको बेर (बेसीसँ बेसी सोलह बेर) ध्वनिक प्रयोग कऽ सकैत छथि।) ई भेल बहरे-कामिल

घ) बहरे-मुतकारिब---एकर मूल ध्वनि फऊलुन अछि मने U-|-| मने ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ। एकर ढाँचा देखू---

U-|-| + U-|-| + U-|-| + U-|-| + U-|-|

U-|-| + U-|-| + U-|-| + U-|-| + U-|-|

(ऐठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिके उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लऽ कऽ कतेको बेर (बेसीसँ बेसी सोलह बेर) ध्वनिक प्रयोग कऽ सकैत छथि।) ई भेल बहरे-मुतकारिब।

ङ) बहरे-मुतदारिक-- एकर मूल ध्वनि अछि "फाइलुन" मने |-U-| मने दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ अछि। एकर ढाँचा एना अछि--

|-U-| + |-U-| + |-U-| + |-U-|

|-U-| + |-U-| + |-U-| + |-U-|

(ऐठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिक उदाहरण देलहुँ अछि मुदा शाइर एकसँ लऽ कऽ कतेको बेर (बेसीसँ बेसी सोलह बेर) ध्वनिक प्रयोग कऽ सकैत छथि)। ई भेल बहरे-मुतदारिक।

च) बहरे-रजज---एकर मूल ध्वनि "मुस्तफइलुन" छैक। मने |-|-U-| मने दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ। एकर ढाँचा एना हेतैक--

|-|-U-| + |-|-U-| + |-|-U-| + |-|-U-|

|-|-U-| + |-|-U-| + |-|-U-| + |-|-U-|

(ऐठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिक उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लऽ कऽ कतेको बेर (बेसीसँ बेसी सोलह बेर) ध्वनिक प्रयोग कऽ सकैत छथि।) ई भेल बहरे-रजज।

छ) बहरे-वाफिर-एकर मूल ध्वनि "मुफाइलतुन" छैक मने U-|-U-U-| मने ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ। एकर ढ़ाँचा देखू----

U-|-U-U-| + U-|-U-U-| + U-|-U-U-| + U-|-U-U-|

U-|-U-U-| + U-|-U-U-| + U-|-U-U-| + U-|-U-U-|

(ऐठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिक उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लऽ कऽ कतेको बेर (बेसीसँ बेसी सोलह बेर) ध्वनिक प्रयोग कऽ सकैत छथि।) ई भेल बहरे-वाफिर।

२) अर्धसमान बहर- ऐ खंडमे कुल सात गोट बहर अछि। एकरा हम अर्धसमान बहर ऐ द्वारे कहैत छिऐक जे ऐ मे सभ पाँतिमे कमसँ-कम अनिवार्य रुपसँ दूटा ध्वनिक समान रुपमे प्रयोग करए पड़ैत छैक। आब शाइर ऐ दुनू ध्वनिक एक पाँतिमे जए बेर (बेसीसँ बेसी सोलह बेर) प्रयोग कऽ सकथि ओ हुनका ऊपर छन्हि। आ ऐ खंडक छहो अन्य बहर लेल एहने सन बुझू।। एकर विवरण निच्चा देल जा रहल अछि।

क) बहरे-तवील- एकर मूल ध्वनि छैक "फऊलुन-मफाईलुन"। एकर ढाँचा देखू-

U-|-| + U-|-|-|

U-|-| + U-|-|-|

U-|-| + U-|-|-| + U-|-| + U-|-|-|

U-|-| + U-|-|-| + U-|-| + U-|-|-|

U-|-| + U-|-|-| + U-|-| + U-|-|-| + U-|-| + U-|-|-|

U-|-| + U-|-|-| + U-|-| + U-|-|-| + U-|-| + U-|-|-|..............................

ऐ बहर आ ऐ खंडक बाँकी अन्य छहो बहरक लेल एकटा आर बात मोन राखू जे ध्वनि जइ क्रममे देल गेल अछि तही क्रममे रहबाक चाही। जेना की बहरे-तवीलमे अहाँ देखलहुँ जे एकर ध्वनि एना छैक " फऊलुन-मफाईलुन" मुदा जँ अहाँ एकरा " मफाईलुन- फऊलुन" बला क्रममे रखबै तँ ई बहरे-तवील नै हएत।

ख) बहरे-मदीद--एकर मूल ध्वनि अछि "फाइलातुन-फाइलुन"। एकर ढाँचा एना छैक-

|-U-|-| + |-U-|

ग) बहरे बसीत--- एकर मूल ध्वनि " मुस्तफइलुन-फाइलुन" छैक। एकर ढाँचा एना हएत--

|-|-U-| + |-U-|-|

घ) बहरे-मुजस्सम वा मुजास--- एकर मूल ध्वनि " मुस्तफइलुन-फाइलातुन" छैक। एकर ढाँचा एहन छैक--

|-|-U-| + |-U-|-|

ङ) बहरे- मुन्सरह---- एकर मूल ध्वनि "मुस्तफइलुन-मफऊलात"। एकर ढाँचा छैक---

|-|-U-| + |-|-|-U

च) बहरे-मजरिअ--- एकर मूल ध्वनि छैक "मफाईलुन-फाइलातुन" एकर ढाँचा एना छैक----

U-|-|-|+|-U-|-|

छ) बहरे-मुक्तजिब---एकर मूल ध्वनि छैक " मफऊलात-मुस्तफइलुन"। एकर ढाँचा छैक-

|-|-|-U +|-|-U-|

३) असमान बहर---ऐ खंडमे कुल तेरह गोट बहर अछि। एकरा हम असमान बहर ऐ द्वारे कहैत छिऐक जे ऐ मे सभ पाँतिमे कमसँ-कम अनिवार्य रुपसँ तीनटा ध्वनिक समान रुपमे प्रयोग करए पड़ैत छैक।जइमे दूटा ध्वनि तँ समान रहैत छैक खाली एकटा मने तेसर ध्वनि दोसर आबि जाइत छैक। आब शाइर ऐ तीनू ध्वनिकेँ एक पाँतिमे जाए -बेसीसँ बेसी सोलह बेर- प्रयोग कऽ सकथि ओ हुनका ऊपर छन्हि। आ ऐ खंडक आर अन्य बहर लेल एहने सन बूझू। एकर विवरण निच्चा देल जा रहल अछि।

क) बहरे-खफीफ------एकर मूल ध्वनि छैक "फाइलातुन-मुस्तफइलुन-फाइलातुन"| एकर ढाँचा छैक--

|-U-|-| + |-|-U-| + |-U-|-|

ख) बहरे-जदीद---एकर मूल ध्वनि छैक "फाइलातुन- फाइलातुन-मुस्तफइलुन"| एकर ढाँचा छैक---------

|-U-|-| + |-U-|-| + |-|-U-|

ग) बहरे-सरीअ----- एकर मूल ध्वनि छैक " मुस्तफइलुन- मुस्तफइलुन-मफऊलात" | एकर ढाँचा छैक-------

|-|-U-| + |-|-U-| + |U||

घ) बहरे-करीब------ एकर मूल ध्वनि छैक " मफाईलुन- मफाईलुन- फाइलातुन"| एकर ढाँचा छैक----

U-|-|-| + U||| + |-U-|-|

ङ) बहरे-मुशाकिल------- एकर मूल ध्वनि छैक " फाइलातुन- मफाईलुन- मफाईलुन | एकर ढाँचा छैक----

|-U-|-| + U-|-|-| + U-|-|-|

च) बहरे-कलीब-------- एकर मूल ध्वनि छैक "फाइलातुन–फाइलातुन-- मफाईलुन" | एकर ढाँचा छैक---

|U||--- |U||---- U|||

छ) बहरे असम------ एकर मूल ध्वनि छैक फाइलातुन--- मफाईलुन--- फाइलातुन एकर ढाँचा छैक |U||---- U|||--- |U||

ज) बहरे कबीर----- एकर मूल ध्वनि छैक मफऊलातु--- मफऊलातु--- मुस्तफइलुन एकर ढाँचा छैक |||U--- |||U--- ||U|

झ) बहरे सगीर----- एकर मूल ध्वनि छैक मुस्तफइलुन--- फाइलातुन---- मुस्तफइलुन एकर ढाँचा छैक ||U|--- |U||--- ||U|

ञ) बहरे-सरीम----- एकर मूल ध्वनि छैक मफाईलुन--- फाइलातुन--- फाइलातुन | एकर ढ़ाँचा छैक-- U||| + |U|| + |U||

ट) बहरे सलीम----- एकर मूल ध्वनि छैक --- "मुस्तफइलुन-- मफऊलातु---मफऊलातु"| एकर ढाँचा छैक ----

||U| + |||U + |||U

ठ)बहरे हमीद----- एकर मूल ध्वनि छैक--- "मफऊलातु----मुस्तफइलुन---मफऊलातु"| एकर ढाँचा छैक ---

|||U + ||U| + |||U

ड) बहरे हमीम--- एकर मूल ध्वनि छैक-- "फाइलातुन--- मुस्तफइलुन--- मुस्तफइलुन"। एकर ढाँचा छैक--

|U|| + ||U| + ||U|

आब हमरा लोकनि ई जानी जे अरबीक ऐ आठो रुक्नकेँ मैथिलीमे केना बदलि सकैत छी। मैथिलीमे दू प्रकारक छंद पद्धति अछि-- मात्रिक आ वार्णिक।

A) मात्रिक–ऐ मे दू, तीन, चारि, पाँच आ छह मात्रा खंडकेँ जोड़ि कऽ अक्षर विन्यास कएल जाइत छैक। आ ऐ अक्षर विन्यासकेँ गण कहल जाइत छैक। मात्रिक छंदमे पाँच टा गण होइत अछि-----

क) ण (णगण) = द्विकल मने दू मात्राक खंड

ख) ढ (ढगण) = त्रिकल मने तीन मात्राक खंड

ग) ड (डगण) = चतुष्कल मने चारि मात्राक खंड

घ) ठ (ठगण) = पंचकल मने पाँच मात्राक खंड

ङ) ट (टगण) = षटकल मने छह मात्राक खंड

ऐ गणक अतिरिक्त मैथिलीमे एक मात्रा, सात मात्रा आ आठ मात्राक वर्ण विन्यास सेहो होइत छैक। मुदा ओकरा गण नै मानल जाइत छैक। कारण एक मात्रा अपूर्ण भेल। तेनाहिते सात वा आठ मात्रा बला विन्यास कोनो ने कोनो रुपेँ उपरका पाँचो गणसँ मिलैत अछि। उदाहरण लेल सात मात्राक वर्ण विन्यास देखू---" पहिराओल" = UU||U । आब ऐ मे देखू पहिल तीन मात्रा मने (UU|) चतुष्कलक रुप थिक आ अंतिम दूनू मात्रा मने (|U) त्रिकलक रुप थिक। आठ मात्राक लेल एहने सन गप्प। उपरक पाँचो मात्रा विन्यासकेँ अलग-अलग रुपेँ लिखल जा सकैए आ ऐ हिसाबेँ ------

द्विकल- दू रूप मे लिखल जाइत अछि----- १) घर = UU २) ओ = |

त्रिकल- तीन रूप मे लिखल जाइत अछि--- १) भिजा = U| २) अपन = UUU ३) आब = |U

चतुष्कल- पाँच रूप मे लिखल जाइत अछि---१) छौंड़ी = || २) तकरा = UU| ३) चुमान = U|U ४) फेकल = |UU

५) सदिखन = UUUU

पंचकल- आठ रूप मे लिखल जाइत अछि--- १) लड़ाकू = U|| २) तिलकोर = UU|U ३) हौहत्ती = |U| ४) तरेगन = U|UU ५) सरधुआ = UUU| ६) जागरण = |UUU ७) अंगूर = ||U ८) चहटगरि = UUUUU

षटकल - तेरह रूप मे लिखल जाइत अछि-- १) सोहारी = ||| २) बपखौकी = UU|| ३) सुधामयी = U|U| ४) मादकता = |UU|

५) असगरुआ = UUUU| ६) सिताएल = U||U ७) लालटेन = |U|U ८) खटखटाह = UUU|U ९) मोताबिक = ||UU १०) अधमौगति = UU|UU ११) सुरेबगर = U|UUU १२) राजभवन = |UUUU १३) चपलचरण = UUUUUU

तँ चलू आब ऐ पाँचो गणसँ अरबी रुक्न बनाबी। ई अरबी रुक्न आठ अछि। तँ देखू एकर निअम-----

१) जँ द्विकलक (णगनक) एहन रूप जइमे एकसरे दीर्घ मने--|| (जेना-जे, गे, खो, जो आदि) रहए आ तकरा बाद पंचकल (ठगण)क ओ रूप रहए जइमे पहिल वर्ण लघु आ तकरा बाद दूनू दीर्घ (U||) हुअए तँ जे रूप बनत से उर्दू मे "फाइलातुन" कहबैत छैक। एकटा उदारहरण लिअ "गे सुशीला"- एकर मात्रा क्रम अछि (|U||) ---- आब एकरा "फाइलातुन" (|U||) सँ मिलाउ। एकरा एना देखू------ | + U|| = |U||

२) जँ पंचकल (ठगण)क ओ रूप जइमे पहिने दूटा दीर्घ आ तकरा बाद एकटा लघु रहए (||U) तकरा द्विकल (णगन)क ओहन रूपसँ जोड़ू जइमे एकसरे दीर्घ (|) रहए। तँ ओ "मुस्तफइलुन" (||U|) बनत। एकरा एना देखू--||U + | = ||U|

३) जँ त्रिकल (ढगण)क ओहन रूप जइमे पहिल लघु आ दोसर दीर्घ (U|) रहए तकरा चतुष्कल (डगण)क ओहन रूपसँ जोड़ू जइमे दुनू दीर्घ (||) छैक। तखन जे बनत तकरा "मफाईलुन" (U|||) बनत मने उदाहरण लेल---निशा एलै (U|||)। एकरा एना देखू-----U| + || = U|||

४) जँ चतुष्कल (डगण)क ओहन रूप जकर शुरूआतमे दूटा लघु आ अंतमे एकटा दीर्घ होइ मने (UU|) तकरा त्रिकल (ढगण)क ओहन रूपसँ जोड़ू जइमे पहिल लघु आ अंतिम दीर्घ मने (U|) तँ "मुतफाइलुन" (UU|U|) बनि जाएत। एकरा एना देखू-------UU| + U| = UU|U|

५) जँ पंचकल (ठगण)क ओहन रूप जइमे पहिल लघु दोसर दीर्घ आ तकरा बाद अंतिम दुनू लघु मने (U|UU) रहए तकरा द्विकल (णगण)क ओहन रूपसँ जोड़बै जइमे एकटा दीर्घ होइक मने (|) तँ मफाइलतुन बनि जाएत। एकरा एना देखू------U|UU + | = U|UU|

६) जँ चतुष्कल (डगण)क ओहन रूप जइमे दुनू दीर्घ रहए (||) मने तकरा त्रिकल (ढगण)क ओहन रूपसँ जइमे पहिल दीर्घ आ अंतिम लघु (U|) रहए तँ "मफऊलात" (||U|) बनत। एकरा एना देखू-----|| + U| = ||U|

७) पंचकल (ठगण)क ओहन रूप जइमे पहिल लघु आ तकरा बाद दूनू दीर्घ रहए मने (U||) से "फऊलुन" कहाइत अछि। एकरा एना देखू------ U||

८) पंचकल (ठगण)क ओहन रूप जइमे पहिल दीर्घ आ तकरा बाद लघु तकरा बाद फेर दीर्घ रहए मने (|U|) से "फाइलुन" कहल जाइत अछि। एकरा एना देखू------|U|

*मात्रा गनबाक लेल मोन राखू जइ अक्षरमे "अ", "इ", "उ", "ऋ" एवं "लृ" नुकाएल रहए तकरा लघु मानू आ तकरा बाद सभकेँ दीर्घ। संगहि संग अनुस्वार तँ दीर्घ अछि मुदा चन्द्रबिंदु लघु। संगहि-संग जँ कोनो शब्दमे संयुक्ताक्षर हुअए तँ तइसँ पहिलेक अक्षर दीर्घ भऽ जाइत छैक चाहे ओ लघु किएक ने हुअए। उदाहरण लेल--प्रत्यक्ष शब्दमे दूटा संयुक्ताक्षर अछि पहिल त्य एवं क्ष। आब ऐ मे देखू "त्य" सँ पहिने "प्र" अछि तँए ई दीर्घ भेल आ "क्ष" सँ पहिने "त्य" अछि तँए इहो दीर्घ भेल। मुदा ई मोन राखू "न्ह" आ "म्ह" संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला शब्दमे लघु दीर्घ नै होइत छैक। जेना की "कुम्हार" मे "म्ह" सँ पहिने "कु" दीर्घ नै भेल तेनाहिते "कन्हाइ" शब्दमे सेहो "न्ह"सँ पहिने "क" वर्ण दीर्घ नै भेल। क्ष, त्र आ ज्ञ संयुक्ताक्षर अछि।

B) वार्णिक छंदमे तीन-तीन मात्रा खंडक आठ विन्यास कएल जाइत अछि। ऐ तीन-तीन खंडक गणना "दशाक्षरी" पद्धतिसँ कएल जाइत

अछि। ई एक प्रकारक सूत्र अछि। ई सूत्र अछि-----"यमाताराजभानसलगा"। ऐ दसो अक्षरमे सँ पहिल आठ अक्षर आठो गणक नामक पहिल अक्षर थिक। आ ई आठ गण अछि-

य = यगण मा = मगण ता = तगण रा = रगण ज = जगण भा = भगण न = नगण स = सगण

आ अंतिम दूटा अक्षर "लगा" कोनो गण नै अछि। कारण ई जे वार्णिक छंदमे तीन-तीन मात्रा होइत छैक। मुदा "लगा" केर बाद कोनो अक्षर नै अछि। तँए "स" क बाद कोनो गण नै बनि सकैत अछि। आब गण बनेबाक तरीका देखू---- अहाँ जे गण बनबए चाहैत छी तकर पहिल अक्षर आ तकरा बादक दू अक्षर आरो लिअ। जे अक्षर क्रम आएत तकर मात्रा गणक मात्रा कहाएत। उदाहरण लेल मानू हमरा "मगण" बनेबाक अछि तँ सभसँ पहिने "मा" लिअ तकरा बादक दू शब्द अछि "तारा"। आब एकरा एकठाम लेने "मातारा" बनत। आब एकर मात्रा अछि---||| | तँ ई भेल "मगण"। एकटा आर उदाहरण लिअ मानू हमरा जगण बनेबाक अछि तँ ज लिअ आ तकरा बाद दू शब्द अछि "भान"। तँ दुनू मिला कऽ "जभान" बनत मने "जगण" केर मात्रा क्रम U|Uअछि। एनाहिते आठो गण बनैत अछि। आठो गणक रुप देल जा रहल अछि-----

गणक नाम	दशाक्षरी खंड	मात्रा क्रम
यगण	यमाता	U||
मगण	मातारा	|||
तगण	ताराज	||U
रगण	राजभा	|U|
जगण	जभान	U|U
भगण	भानस	|UU
नगण	नसल	UUU
सगण	सलगा	UU|

तँ चलू आब ऐ आठो गणसँ अरबी रुक्न बनाबी। ई अरबी रुक्न आठ अछि । तँ देखू एकर निअम----

१) **यगण (U||)सँ पहिने एकटा दीर्घ लगेने " फाइलातुन" बनत। मने | + यमाता = |U|| = फाइलातुन**

(वैकल्पिक रुपें एनाहुतो कऽ सकैत छी------- रगण मने **(|U|)** क बाद एकटा आर दीर्घ लगेने "फाइलातुन" बनत। मने |U| + | = |U||

२) **रगण (|U|) सँ पहिने एकटा दीर्घ लगेने " मुस्तफइलुन " बनत। मने | + रगण = ||U| = मुस्तफइलुन**

(वैकल्पिक रुपें एनाहुतो कए सकैत छी----- तगण मने (||U) कँ बाद एकटा आर दीर्घ लगेने "मुस्तफइलुन" बनत। मने ||U + | = ||U|)

३) **यगण (U||)क बाद एकटा दीर्घ लगेने "मफाईलुन" बनत। मने U|| + यगण = U||| = मफाईलुन**

(वैकल्पिक रुपें एनाहुतो कऽ सकैत छी---- मगण मने (|||) सँ पहिने एकटा लघु लगेने "मफाईलुन" बनत। मने U+||| = U|||

४) **रगण (|U|) सँ पहिने दूटा लघु लगेने "मुतफाइलुन" बनत। मने UU + रगण = UU|U| = मुतफाइलुन**

(वैकल्पिक रुपें एनाहुतो कए सकैत छी--- सगण मने (UU|) कँ बाद एकटा लघु आ तकरा बाद एकटा दीर्घ लगेने "मुतफाइलुन" बनत।

मने UU| + U + | = UU|U|

५) **जगण मने (U|U) क बाद एकटा लघु आ तकरा बाद एकटा दीर्घ लगेने "मफाइलतुन" बनत। मने U|U + U + | = U|UU|**

६) **मगण मने(|||) क बाद एकटा लघु लगेने "मफऊलात" बनत। मने ||| + U = |||U = मफऊलात**

(वैकल्पिक रुपें एनाहुतो कए सकैत छी----- तगण मने (||U)सँ पहिने एकटा दीर्घ लगेने ''मफऊलात'' बनत। मने | + ||U = |||U

७) यगण मने (U||) पूरा-पूरी "फऊलुन" क बराबर अछि।

८) रगण मने (|U|) पूरा-पूरी "फाइलुन" क बराबर अछि।

तँ दुनू प्रकारक छंद आ तकरा रुक्नमे बदलनाइ हमरा लोकनि सेहो देखलहुँ। तँ आब चलू तैआर भऽ जाउ गजल लिखए आ पढ़ए लेल। ऐ लेखक सहायतासँ खाली मैथिलीए नै कोनो आन भाषामे सेहो सही गजल लीख सकै छी, खाली काफियाक निअम बदलि जेतै भाषाक हिसाबे।

<u>मैथिलीमे बहर</u>

ऊपरमे हमरा लोकनि जतेक बहर देखलौं तइ उपर मैथिलीमे आइ धरि गजल कहले नै गेल। अर्थात जीवन झासँ लऽ कऽ २००८ धरि मैथिलीमे बहर नै छल। २००८क बाद गजेन्द्र ठाकुर उपरका बहरमे गजल तँ कहबे केलाह संगहि-संग मैथिली लेल एकटा अन्य बहर सेहो तकलाह जकर नाम देल गेल---वार्णिक बहर। ऐ बहरक मतलब छैक मतलाक पहिल पाँतिमे जतेक वर्ण छैक ओइ गजलक आन हरेक शेरक पाँतिमे ओतबए वर्ण हेबाक चाही। उपरमे उदाहरण लेल हम अपन जतेक शेर देने छी ओ सभ सरल वार्णिक बहरमे अछि।तथापि एकटा उदाहरण आर-----

जहिआ धरि हमरा श्वास रहत

तहिआ धरि हुनक आस रहत

आब एकरा गानू। ऐ दुनू पाँतिमे १३-१३ वर्ण अछि। ई भेल सरल वार्णिक बहर। वर्ण कोना गानल जाए तइ लेल ई धेआन राखू-----

हलंत बला अक्षरकें ० मानू

संयुक्ताक्षरमे संयुक्त अक्षरकें १ मानू। जेना की "हरस्त" मे स्त=१ भेल।

तकरा बाद सभ अक्षरकें १ मानू चाहे ओकर मात्रा लघु रहए की दीर्घ।

वार्णिक बहर दू तरहक अछि---

सरल वार्णिक बहर, आ वार्णिक

१) सरल वार्णिक बहर----- उपरका सभ उदाहरण सरल वार्णिकक अछि।

२) वार्णिक-------- ऐ मे वर्णक संग-संग मात्राक सेहो धेआन राखए पड़ैत छैक। मने वर्णक संख्या तँ निश्चित हेबाके चाही संगहि-संग ह्रस्व क निच्चा ह्रस्व आ दीर्घ क निच्चा दीर्घ हेबाके चाही। उदाहरण लेल-----

नचनी नाच नचा गेल प्रेम हुनकर

जिनगी बाँझ बना गेल प्रेम हुनकर

आब ऐ शेरकें देखू। दुनू पाँतिमे १५ वर्ण तँ छैके संगे-संग पहिल पाँतिमे जइ ठाम जे मात्रा छैक वएह मात्रा दोसरो पाँतिमे ओइ ठाम छैक। तँ ई भेल वार्णिक बहर|

आब अहाँ एतए प्रश्न कऽ सकैत छी जे जँ ऐ मे ह्रस्व क निच्चा ह्रस्व आ दीर्घक निच्चा दीर्घ छैक तँ एकरा उर्दूक बहर किएक ने मानल जाए। मुदा ऐठाम मोन राखू खाली ह्रस्वक निच्चा ह्रस्व आ दीर्घक निच्चा दीर्घ रहने उर्दूक बहर नै होइत छैक। जँ अहाँ एकरा मात्रा क्रम देबै तँ पता चलत जे एकर रुप एना छैक---

U+U+|+|+U+U+|+|+U+|+U+U+U+U+U

आब अहाँ गौरसँ देखू ई ढाँचा उर्दूक कोनो बहरसँ मेल नै खाइत अछि। तँए ऐ शेरमे ह्रस्वक निच्चा ह्रस्व आ दीर्घक निच्चा दीर्घ रहितो ई उर्दूक बहर नै मानल जाएत।

आब कने ई विचारी जे मैथिलीमे कोन बहरकेँ प्रधानता दी। जेना की हमरा लोकनि जनैत छी "सरल वार्णिक बहर" सभसँ बेसी हल्लुक अछि तँए गजलगो (शाइर) शुरुआतमे ऐ बहर मे गजल लिखथि तँ नीक। तकरा बाद अभ्याससँ दोसर बहर (वार्णिक बहर) पर आबथि आ तकरा बाद उर्दू बला बहरपर हाथ अजमाबथि। एखन मैथिलीमे दोसर बहर अर्थात वार्णिक बहरक प्रारंभिक चरण चलि रहल अछि। अंतमे सभसँ खास गप्प गजल चाहे अहाँ कोनो बहर मे किएक ने लिखब रदीफ आ काफियाक निअम सभ लेल एकै रंग रहत।

गजलक भाषा

चूँकि गजलकेँ प्रेमी-प्रेमिका (आत्मा-परमात्मा)क गप्प-सप्प सेहो मानल जाइत छैक। आ गप्प-सप्प सदिखन गद्यमे होइत छैक तँए गजल लेल गद्यात्मक भाषा हेबाक चाही। ऐ स्तरपर ई संस्कृत काव्यसँ बिलकुल अलग अछि। जे गजल जतेक गद्यात्मक हएत ओ ओतेक बेसी नीक हएत। भाषाक संबंधमे एकटा आर गप्प- हरेक भाषाक दूटा रूप होइत छैक पूर्ण आ अपूर्ण। मैथिलीओ मे छैक, किछु उदाहरण देखू-

पूर्ण रूप------ **अपूर्ण रूप**

नहि---------------नै

जाहिठाम----------जैठाम

कतेक-------------कते

हेतैक-------------हेतै

गजलक संदर्भ मे हमर ई अनुभव अछि जे अपूर्ण भाषा गजल लेल बेसी नीक। कारण भाषाक अपूर्ण रूप लोकमे उच्चरित होइत छैक आ गजल तँ पूरा-पूरी उच्चारणपर निर्भर छैक। तँए जे तेजी अहाँकेँ "नै हेतै" वाक्य-खंडमे भेटत ततेक तेजी "नहि हेतैक" वाक्य खंडमे नै भेटत। हम अपन गजलमे अपूर्ण रूपकेँ प्रधानता देने छी। पूर्ण रूपक प्रयोग हम खाली वर्ण आ मात्रा मिलेबाक लेल करैत छी।

आब अपना गजलक मादें किछु शब्द। हम बहुत कम दिनसँ गजल लिखैत छी। आ ई वास्तविकता छैक। संगहि-संग इहो वास्तविकता छैक जे हम मरितो काल धरि गजल लिखब आ तखनो कहब जे "हम बहुत कम दिनसँ गजल लिखैत छी"। हमर मोनमे गजल प्रायः २००१सँ बसल अछि मुदा एकर भयंकर रुप तखन देखाएल जखन की २००८मे "अनचिन्हार आखर" (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/) मैथिलीक पहिल गजलक ब्लागके रुपमे जन्म लेलक। आ ऐ "अनचिन्हार आखर"क प्रति हम कतेक मोहासक्त छी से अहाँ सभ देखिए रहल हएब। ओना एखन धरिक हमर सभ गजल सरल वार्णिक बहरपर आधारित अछि। ओइमे कोनो-कोनोमे वार्णिक बहरक झलक सेहो भेटि जाएत। गलती कतेको प्रकारसँ होइत छैक जेना की अज्ञानतावश, मोहवश, आलस्यवश आदि। बहुत संभव जे हमर आलेख आ गजलमे बहुत रास गलती होइक। आ ऐ लेल सुधी पाठकसँ माफी चाहैत छी। संगहि-संग जँ किनको कोनो सुझाव देबाक छन्हि ओ वयक्तिगत वा सार्वजनिक रुपें दऽ सकैत छथि। समय अएलापर हम ओइ हिसाबें जरूर परिवर्तन करबै | एकटा आर विशेष गप्प ऐ ज्ञान धरि पहुँचबा लेल हम जइ पोथी सभकेँ पढ़लौं तनिकर लेखक सभकेँ वा जनिकासँ कोनो प्रकारे सहायता भेटल हुनका हम धन्यवाद नै देबन्हि। कारण लोक धन्यवाद दऽ कऽ अपन कर्जा उतारि लैत अछि। मुदा हमरा ई कर्जा उतरबाक इच्छा नै अछि। हम जीवन भरि आभारी रहऽ चाहैत छी हुनका सबहक प्रति।

-आशीष अनचिन्हार

समर्पण

सिरजनहारकेँ

अनुक्रम

गजल

१

मालक खातिर तँ माल-जाल बनल लोक
देखाँउसक खातिर कंगाल बनल लोक

भूखक दर्द होइत छैक प्रकाशोसँ तेज
देखू पेटक खातिर दलाल बनल लोक

वृत तँ टूटल मिलल समानांतर रेखा
देखू बिनु कागजीक प्रकाल बनल लोक

सत्त-सत्त ने रहल ने रहल फूसि-फूसि
अपने लेल अपने जंजाल बनल लोक

उपरसँ गंगा घाट भीतर मोकामा घाट
एतए नुनिआएल देबाल बनल लोक

**** वर्ण---------१६*****

२

चुप्प रहत मनुख गिद्दर भुकबे करतैक
निर्जीव तुलसी चौरा कुकुर मुतबे करतैक

जँ केकरो वीरता सीमित रहि जाए गप्प धरि
तँ दुश्मनक लात छाती पर पड़बे करतैक

विद्रोह आ अधिकारके अधलाह बुझनिहार
आइ ने काल्हि अपटी खेतमे मरबे करतैक

बसात पर बसात दैत रहू क्रांतिक आगिके
नहुँए-नहुँ सही कहिओ तँ जरबे करतैक

कहैत रहिऔ विद्रोहक गजल अनचिन्हार
कहिओ केओ ने केओ एकरा पढ़बे करतैक

**** वर्ण---------१८*******

३

एहि लाइलाज बेमारीक की हाल हेतै
स्वेछाचारी-चारणीक की दलालहेतै

हरेक समय बितैए दुख आ दर्दमे
गरीब लेल नव पुरान की साल हेतै

नौकरी उड़िआ गेलै बालु जकाँ देशसँ
आब किएक केओ काजमे बहाल हेतै

अहुरिआ कटैत लोक डूबल नोरमे
ओ तँ नोरे पीबि मँगनी मे हलाल हेतै

धैरज धरु प्रतीक्षा करु अनचिन्हार
मरब तँ नीक जिनगी तँ जंजाल हेतै

**** वर्ण---------१५********

४
मछगिद्ध जँ माछ छोड़ए तँ डर मानबाक चाही
लोक जँ नेता भए जिबए तँ डर मानबाक चाही

बेसबा खाली देहे टा बेचैत छैक अभिमान नहि
लोक अस्वभिमानी हुअए तँ डर मानबाक चाही

सभके छै बूझल शेर केखनो नहि खाएत घास
जँ बीर अँहिंसक बनए तँ डर मानबाक चाही

सीमा केर रक्षा करैत जे मरथि सएह बिजेता
माए बेचि जँ रण जितए तँ डर मानबाक चाही

सम्मानक रक्षा करब उद्येश्य अछि गजल केर
जँ ओकर उद्येश्य छुटए तँ डर मानबाक चाही

**** वर्ण---------१९*******

५

एहि रुपें सभमे करार हेतै
खाए लेल मनुखे जोगार हेतै

मीडिआ तँ बनि गेलै पोर्नोग्राफी
आब सएमे सए फिराड़ हेतै

बयससँ पहिने बच्चा जबान
पंचमे बर्खें रति झमार हेतै

संबंध जरि रहल सभ ठाम
परिवार गूँहक भराड़ हेतै

चेतह अनचिन्हार रुकि जाह
छनेमे आदमी बेस्महार हेतै

**** वर्ण---------१२******

६

कागतक नाह चलि रहल सुखाएल धारमे
ओ तँ घरमुरिआ दैए इजोरिआक अन्हारमे

नाङट समय नाङट आदमी आ नाङट व्याख्या
राधा भेटतीह गली-गली कान्ह हरेक छिनारमे

छद्म भेषे रहितहि तँ एहन सन गप्प नहि
मोश्किल छैक फर्क केनाइ मनुख आ हुराड़मे

बजैत लोकके सुनबाक फुर्सति कहाँ भेटतै
एहिठाम सभ लागल अछि आत्म-अभिसारमे

किछुओ कहब खतरनाक बुझाइए एतए
एकौटा अपन लोक कहाँ एते अनचिन्हारमे

**** वर्ण---------१८******

७

मनुख पर भुकैए कुकूर
खजानाके चोरबैए कुकूर

की मनु की आदम की छै हौआ
नियम बना तोड़ैए कुकूर

लक्ष्य नै बाटे-बाट पसरल
बेमतलब दौड़ैए कुकूर

आगि-पानि-बसात बेकाजक
रंग-महलमे रहैए कुकूर

पदितो जाइ पड़ाइतो जाइ
कुकूरेके हबकैए कुकूर

**** वर्ण---------११*******

८

आबो परबोध करु
अपने विरोध करु

लोक तँ बढ़त आगाँ
अहाँ अवरोध करु

धनी बनि जाए धनी
एहने तँ शोध करु

बहर नै गजल नै
इ आबो तँ बोध करु

आएत अनचिन्हार
अहाँ अनुरोध करु

**** वर्ण---------८********

९

भेष हुनक भगवान सन
काज   हुनक सइतान सन

बेटा बलाके तँ पंडित बुझू
बेटी बला तँ जजमान सन

मँहगाइ बढ़ल छै तेना ने
कोबरो तँ झूरझमान सन

देहे जिंदा,भावना मरि गेलै
जग लगैए समसान सन

नहि बनत केओ राम मुदा
सेवक चाही हनुमान सन

**** वर्ण---------११********

१०

इ दुराचार अँहिक खूरक प्रतापे
इ भ्रष्टाचार अँहिक खूरक प्रतापे

देखू लोक पढ़ैए जान अरोपि कए
मुदा बेकार अँहिक खूरक प्रतापे

जनबल,धनबल, आरो बल-बल
इ सरकार अँहिक खूरक प्रतापे

इहुत-विद्दुत सभटा फेल की कहू
भेल अन्हार अँहिक खूरक प्रतापे

हाथ मिलाउ, छाती लगाउ तैओ सभ
अनचिन्हार अँहिक खूरक प्रतापे

**** वर्ण---------१४******

११

मूसक आखर बिलाइक नाम
गाएक नोर तँ कसाइक नाम

हुनका नै हुनकर धोधि देखू
घीअक सुगंधि मलाइक नाम

किएक शिक्षकके सम्मान हेतै
बापक कर्जा तँ पढ़ाइक नाम

आरि मने गारि, गारि मने मारि
खेतक उपजा बटाइक नाम

एहनो होइ छै कहिओ-कहिओ
पानिक प्रेम तँ सलाइक नाम

**** वर्ण---------१२******

१२
जीबनमेँ सभकेँ एनाहिते घाम चलैए
केखनो अराम तँ केखनो हराम चलैए

अधरतिआमे देखबै केखनो अनचोके
चुड़ैले जकाँ तँ उन्टा हमर गाम चलैए

आब तँ तरबा बचि जाइत छै सदिखन
बाट पर सदिखन जुत्ता-खराम चलैए

रामक आदर्श तँ मरि गेल हुनके संगे
बुझू आब तँ खाली हुनक नाम चलैए

चिन्हार तँ बिलमि जाइए चिन्हारक संग
देखू अनचिन्हार मुदा अविराम चलैए

**** वर्ण---------१६******

१३

गोली सँ तँ डेराएल अछि मनुखसँ सइतान धरि
जानवर तँ जानवर भगवत्तीसँ भगवान धरि

नीकक लेल सोहर तँ खरापक लेल समदाउन
गाबिए रहल गबैआ सोइरीसँ असमसान धरि

इ समालोचना केकरा कहैछ छन्हि किनको बूझल
पढ्ू, अछि सगरो पसरल निन्दासँ गुणगान धरि

राम नामक लूटि थिक लूटि सकी तँ लूटू सदिखन
लूटि रहल छथि दक्षिणा पंडितसँ जजमान धरि

सदिखन पसरि रहल पसाही सगरो कोने-कोन
घृणा-द्वेष-तामस क्रिसमस-होलीसँ रमजान धरि

**** वर्ण---------२०*******

१४

देह केराक थंब सन गोर-नार लगैए
अड़हूलक फूल सन भकरार लगैए

नोर अँहाक तँ बेली-चमेली,गेंदा-गुलाब
मुदा हँसी तँ अँहाक सिंगरहार लगैए

मरनाइ तँ एकै होइ छै सभहँक लेल
लहासे सन तँ कटल कचनार लगैए

सीसोक सीस कटल,चऽहुक चऽहु टुटल
आमक नव पल्लव तँ अंगार लगैए

आम-जाम,कुम्हर-कदीमा,लताम-सरीफा
आब तँ जकरे देखू अनचिन्हार लगैए

**** वर्ण---------१६*******

१५
मोन पड़ैए केओ अनचिन्हार सन
साइत कहीं इएह ने हो प्यार सन

जे नै कमा सकए टका बेसीसँ बेसी
लोक तँ ओकरे बुझै छै बेकार सन

समय कहाँ कहिओ खराप भेलैए
कमजोरके लगिते छै अन्हार सन

किछु तँ देखाएल चोके-अनचोकेमे
चोरे तँ बुझाइए पहरेदार सन

संग रहबै-छोड़बै तँ फरक देखू
बालु जकाँ समस्या पहाड़ सन

**** वर्ण---------१४*******

१६
जीबनमे दर्दक सनेश शेष कुशल अछि
हम नहि कहब विशेष शेष कुशल अछि

अन्हरे सरकार तँ चला रहल राज-काज
की कहू, छै बौकक इ देश शेष कुशल अछि

देहे टा बदलैए आत्मा नहि सूनि लिअ अहाँ
एहने सरकारक भेष शेष कुशल अछि

मुक्का आ थापड़क उपयोगके करत आब
खाली आँखिए लाल-टरेस शेष कुशल अछि

गजल कहब एतेक सोंझ नै अनचिन्हार
हम तँ आब चलै छी बेस शेष कुशल अछि

**** वर्ण---------१७*******

१७
अँहा तँ असगरेंमे कानब मोन पाड़ि कए
करेजक बाकसके घाँटब मोन पाड़ि कए

आइ भने विछोह नीक लागि रहल अँहाके
काल्हि अहुरिआ काटि ताकब मोन पाड़ि कए

मिझरा गेलैक नीक-बेजाए दोगलपनीसँ
कहिओ एकरा अँहा छाँटब मोन पाड़ि कए

अँहा जते नुका सकब नुका लिअ भरिपोख
फेर तँ अँही एकरा बाँटब मोन पाड़ि कए

आइ जते फाड़बाक हुअए फाड़ि दिऔ अहाँ
मुदा फेर तँ इ अहीँ साटब मोन पाड़ि कए

**** वर्ण---------१७*******

१८

जँ प्रेम अछि तँ कहनहि नीक
शीतल आगिमे जरनहि नीक

घोघक रहस्य तँ एना बुझिऔ
झरकल मुँह झपनहि नीक

लोक जहर दैए मुस्किया कए
आब तँ हँसीसँ डरनहि नीक

दबाइ देबै तँ बढ़बे करत
प्रेमक दर्दके सहनहि नीक

आब जँ भेटत दुख अहूँ लग
तखन संसार छोड़नहि नीक

**** वर्ण---------१२*******

१९
बाजू चोर आ चुहारक लेल ताला की
अँही कहू बेइमान लेल केबाला की

लोक डुबैत अछि भाव आ अभावमे
कहू डुबबाक लेल नदी आ नाला की

लोक तँ खुश होइए तेल मालिशसँ
एहि रोगीक लेल दबाइ वा आला की

फूसे घर पर होइए दैवी प्रकोप
इल्डिंग-बिल्डिंग लेल ठनका-पाला की

इज्जत सुकाजसँ भेटै छै संसारमे
एहि लेल बासन-सिंहासन-माला की

**** वर्ण---------१४*******

२०
आइ-काल्हि भाँड़े आ की भड़ुएक तँ चलती छैक
आइ-काल्हि चोरे की पहरुएक तँ चलती छैक

होइत रहल निपत्ता फल आ फूल बगैचासँ
सुखाएल सन जड़ि मालिएक तँ चलती छैक

चिचिआ कए जगबैत छल लोकके सदिखन
गोली खेलक ओ निशबद्दीएक तँ चलती छैक

घोघके घोघ नै ओकरा आब दोसरे चीज बुझू
साँझ-राति धंधामे बहुरिएक तँ चलती छैक

कलम लेने ठाढ़ अनचिन्हार चौबटिआ पर
कुबाट देखबैत कुमार्गिएक तँ चलती छैक

**** वर्ण---------१८*******

२१
कहू, इ की केलहुँ बैसले-बैसल अँहा
आगि तँ लगेलहुँ बैसले-बैसल अँहा

रोड़ी कहींक इँटा-बालु सीमेंट कहींक
महल बनेलहुँ बैसले-बैसल अँहा

इन्द्र की करताह परतर अँहा संग
तंत्र जन्मा देलहुँ बैसले-बैसल अँहा

अगस्तस्य तँ पीने छलाह एकटा नदी
समुद्रो पी गेलहुँ बैसले-बैसल अँहा

लाठी-भाला लेने बैसल छल ओ खेतमे
साँढ़ ढुका देलहुँ बैसले-बैसल अँहा

**** वर्ण---------१५*******

२२
बाट अन्हारमे डूबल केकरा बजाउ
जगैत लोक तँ सूतल केकरा बजाउ

लेलहुँ हम सप्पत रहब एकै संग
ओ तँ मोड़ पर छूटल केकरा बजाउ

राम ठकाएल तँ अल्ला छथि बौआएल
मंदिर-मस्जिद टूटल केकरा बजाउ

दुनियाँ घालमेलक दुनियाँ भ्रमजाल
सीसी-छौंड़ी-पाइ घूमल केकरा बजाउ

चाहै छलहुँ आबथि हमर करेजमे
मुदा इ किस्मते रूसल केकरा बजाउ

**** वर्ण---------१५*******

२३
गजल सुख जिनगीक गजल दर्द जिनगीक
रहए ठाढ़ अविचल गजल मर्द जिनगीक

अँहा हिमालयक भाए छी वा कैलाशक जन्मल
बनि गेल आगिक गोला गजल सर्द जिनगीक

देखएमे तँ हेतैक लाजोके लाज तेहने सन
देखाएत अंग-अंग गजल बेपर्द जिनगीक

अनचिन्हार साकी दए रहल गजलक हाला
बनल छैक दबाइ गजल बेदर्द जिनगीक

इ तँ साफ करबे करत कोने-कोनमे जा कए
देखू कोना पसरल छै गजल गर्द जिनगीक

**** वर्ण---------१८*******

२४

किछु दूर चलब हमहूँ जँ संग दए सकी
रंगि देब हम तँ रंगमे जँ रंग दए सकी

अन्हारोमे चलब हम बिनु ठोकर खएने
हमरा चलबाक जँ कनिको ढ़ंग दए सकी

कहबै जँ चार पर तँ चढ़बै पहाड़ पर
किच्छो ने असंभव जँ कने उमंग दए सकी

हेताह कोने-कोन मे नुकाएल कतेको राम
मरत इ रावण जँ धनुष-भंग दए सकी

हमहूँ रहि सकै छी सभसँ दूर सदिखन
जँ अपने जकाँ भावना अपंग दए सकी

**** वर्ण---------१७*******

२५
हँसैत जिनगी कना बैसल छी
मोनमे केकरो बसा बैसल छी

नहि होइक अन्हार कोबरमे
तँ तँए करेज जरा बैसल छी

उराहल पानिसँ कब्ज होइए
गंगो-जलके सड़ा बैसल छी

भेटबे टा करत केओ ने केओ
उम्मीदे पर तँ जिया बैसल छी

करोटक तँ परिवर्तन नाम
जखन की आत्मे सुता बैसल छी

**** वर्ण---------१२*******

२६

अपन आँखिमे बसा लिअ हमरा
अपन श्वासमे नुका लिअ हमरा

जहाँ मरितो जीबाक आस रहए
ओहने ठाम तँ बजा लिअ हमरा

हाथ सटेलासँ मोन केना भरतै
अहाँ करेजसँ सटा लिअ हमरा

भरि जिनगी बौआइते रहलहुँ
अपने संग तँ बैसा लिअ हमरा

जाइ छी मुदा जेबाक मोन नै अछि
कोनो सप्पतसँ घुरा लिअ हमरा

**** वर्ण---------१३*******

२७
इजोतक दर्द अन्हारसँ पुछिऔ
धारक दर्द तँ किनारसँ पुछिऔ

नहि काटल गेल हएब जड़िसँ
काठक दर्द तँ कमारसँ पुछिऔ

समदाउनो तँ निर्गुने बुझाएल
कञिआक दर्द कहारसँ पुछिऔ

खेतक हरिअरी तँ नीक लगैए
इ अनाजक दर्द धारसँ पुछिऔ

करबै की हाथ आ गरा मिला कए
इ दर्द तँ अनचिन्हारसँ पुछिऔ

**** वर्ण---------१३*******

२८

(क)

केकनैए हमरा लेल
केहँसैए हमरा लेल

सपनामे एबै आस नै
केसुतैए हमरा लेल

जँ हम चलिए जाएब
केरहैए हमरा लेल

छोड़ि दिअ सुतले अहाँ
केउठैए हमरा लेल

अनचिन्हार नाम-गाम
केअबैए हमरा लेल

**** वर्ण---------९*******

(ख)

केकनैत अछि एहिठाम हमरा लेल
केहँसैत अछि एहिठाम हमरा लेल

हुनकर सपनामे एबै विश्वास नहि
केसुतैत अछि एहिठाम हमरा लेल

उठनाइ खराप नहि मुदा अहूँ सोचू
केसुतैत अछि एहिठाम हमरा लेल

बसातक संग आबि गेल मनुख-गर्दा
केउड़ैत अछि एहिठाम हमरा लेल

अनचिन्हार नाम गामो तँ अनचिन्हार
केअबैत अछि एहिठाम हमरा लेल

**** वर्ण---------१५*******

२९
हमरा मोनमे बैसल मात्र अदना साँप
इ बाहर सह-सह करैत पदना साँप

लगबैत रहलहुँ भएट आ सूचना तंत्र
देखू बढ़ैत रहल महँगी-विपदा साँप

इ बिकनीक डिजाइन छैक की सुन्दरीक
देखिऔ छातीमे लेपटाएल तगमा साँप

हम तँ मनुसँ जन्मल रही की आदमसँ
बाजत किएक इ सेकुलर-भगवा साँप

बुझाएत नै रहत पातेमे मिझराएल
सुनू एनाहिते तँ डसैत छै सुगवा साँप

अनचिन्हार रहत वा चिन्हार की करबै
समय पर सभ बनै अजगरबा साँप

**** वर्ण---------१६*******

३०
एहने अहाँक प्रेम छल पछाति जानल हम
खाली मूहँक तँ छेमछल पछाति जानल हम

आगि लागल छै घर मे चिन्ताक गप्प नहि कोनो
कारण अपने टेम छल पछाति जानल हम

सड़ैत देखलिऐक किच्छोके कादो मे सदिखन
अपने घरक हेम छल पछाति जानल हम

कोंढ़ीके सुँघलकै आ बजरखसुआ चलि गेलै
दाइ ओ नकली भेम छल पछाति जानल हम

कानून तँ बनै छै आ टूटै छै बेर-बेर देशमे
लोके लेल नेम-टेम छल पछाति जानल हम

**** वर्ण---------१८*******

३१

माटि-पानि-बसात लेल युद्ध
देखू छोटको बात लेल युद्ध

आदर्श बनाम आदर्शवादी
बुद्ध-गाँधीक गात लेल युद्ध

जर-जमीन-जोरु एतबा नै
देखू फेकल पात लेल युद्ध

नून नै चटबए पड़तै बेटीके
आब तँ गर्भपात लेल युद्ध

तकनीकी जुगक इ व्यवस्था
साँझ होइते प्रात लेल युद्ध

**** वर्ण---------११*******

३२
पतालमे जा अकास नपैत छी
डिबिआ मिझा प्रकाश तकैत छी

कागतमे लिखल कागती प्लान
घोटालासँ विकास करबैत छी

पानि सड़ि गन्हाइते रहलैक
आरिए बान्हि पानि बहबैत छी

बुड़िबक देवी कुरथी अक्षत
हम एहने विकास करैत छी

चिन्हार नहि अनचिन्हारे नीक
तँए तँ परिचय नुकबैत छी

**** वर्ण---------१२*******

३३
गुंगुआइत बसात चुप्प रहू
पदुराइत बसात चुप्प रहू

चारु दिस तँ पसरि गेल धुँआ
हे पझाइत बसात चुप्प रहू

अहाँक कुंठा जड़ि जमेने अछि
किकिआइत बसात चुप्प रहू

अहूँ पर हँसत केओ-कहिओ
ठिठिआइत बसात चुप्प रहू

जे भेटत अनचिन्हारे भेटत
चिचिआइत बसात चुप्प रहू

**** वर्ण---------१२*******

३४

अहूँ तँ पड़ाएल छलहुँ हमहूँ तँ पड़ाएल छलहुँ
अहूँ घबराएल छलहुँ हमहूँ घबराएल छलहुँ

शायद एहने भेंट लिखल छल कपारमे सदिखन
अहूँ तँ लजाएल छलहुँ हमहूँ तँ लजाएल छलहुँ

रुकलाहा जिनगीक लेल सौरी बेर-बेर सौरी सजनी
अहूँ उबिआएल छलहुँ हमहूँ उबिआएल छलहुँ

शेर तँ चल गेल आब ताल देनहे की हएत कहिऔ
अहूँ सुटिआएल छलहुँ हमहूँ सुटिआएल छलहुँ

रहि गेलहुँ अनचिन्हार करेज सटेलाक पछातिओ
अहूँ अगुताएल छलहुँ हमहूँ अगुताएल छलहुँ

**** वर्ण---------२१*******

३५

प्रकृति जँ दुश्मन बनए तँ ओकरा रोकब कठिन
काँटी जँ छाती पर रहए तँ ओकरा ठोकब कठिन

लक्ष्य जँ नहि रहत आँखिक सीमान पर सदिखन
जोर लगेलाक पछातिओ ओकरा लोकब कठिन

संसारमे पापक घैलके एहने गति छै से मानै छी
जँ नै रहबै सत्यक संग तँ ओकरा फोड़ब कठिन

आब जँ अहाँ चाही तँ एकरा कोनो नाम दए सकै छी
केकरो करेज सँ निकलल गप्पके तोड़ब कठिन

बौआइत रहू मसाने गाछिए-बिरछिए सदिखन
जँ अहाँ नहि बनब भूत तँ ओकरा टोकब कठिन

**** वर्ण---------२०*******

३६
बनतै कतेक बहन्ना देखबाक चाही
ओ बनतै कतेक सन्ना देखबाक चाही

आब तँ भेल नूनो-सोहारी पर आफद
सुनू फटकी कतेक चन्ना देखबाक चाही

थपड़ी तँ अदौसँ बजिते आएल अछि
लुटतैके कतेक टन्ना देखबाक चाही

घरक बोझ छिड़िआ रहल सदिखन
कोम्हर हेड़ा गेल जुन्ना देखबाक चाही

खेतोके पता नहि की भए गेलैक अछि
खादोक बाद मरहन्ना देखबाक चाही

**** वर्ण---------१५*******

३७
बटोही केहन छैक बाट पर चलि कए देखिऔक
पिआसलक पिआस घाट पर चलि कए देखिऔक

घर मे घोंघाउज केने कोनो लाभ नहि भेटत आब
सस्ती-महँग केहन हाट पर चलि कए देखिऔक

कमजोर वस्तुक मर्म ओना नहि बुझाएत अहाँके
कने दिबाड़ लागल टाट पर चलि कए देखिऔक

बुझिए जेबै कुसिआर आ सिट्ठी केर संबंध अहाँ तँ
कनेक कोल्हुआरक राट पर चलि कए देखिऔक

नै रहत कनियों मोल अहाँक गुण केर दुनियाँमे
अहाँ बिनु पैकिंग के हाट पर चलि कए देखिऔक

**** वर्ण---------२०*******

३८

एक बेर फेर हँसिऔ कनेक
ओही नजरिसँ देखिऔ कनेक

बाजब प्रेम लेल जरुरी नहि
आँखि झुका चुप्प रहिऔ कनेक

हम आबि गेलहुँ अहींक लेल
हमरो लेल तँ चलिऔ कनेक

प्रेमक भाषा अहींके अछि पता
आब हमरो बुझबिऔ कनेक

नहि रहत केओ अनचिन्हार
हाथ बढ़ा कए देखिऔ कनेक

**** वर्ण---------१२*******

३९

अपनेसँ आगि लगबैत छी मिझबैत छी
अपनेसँ पीबि खसैत छी आ सम्हरैत छी

आँखिमे भरल छै नोरक धन लकथक
अपनेसँ जमा करैत छी आ लुटबैत छी

शांत इजोरिआमे अशांत करेज हमर
अपनेसँ हकार दैत छी आ नोंत पुरैत छी

टूटल करेजके तँ आरो टुटबाक इच्छा
अपने करेज तोड़ैत छी आ कुहरैत छी

केबूझत हमर दुख आ दर्द एहिठाम
चिन्हार रहितहुँ अनचिन्हार रहैत छी

**** वर्ण---------१६*******

४०

पिपरक पात जँका तँ डोलैत लोक
सिम्मरिक रुइ जँका तँ उड़ैत लोक

देखू सृष्टि तँ बनि गेल भुतहा गाछ
भोर-साँझ ओझाके सहैत लोक

नोर तँ मानल गेल गंगा-जल जँका
देखू नोरेसँ जिनगी धोबैत लोक

सीसा तँ मासे-मास टूटै लोहा बर्खमे
मुदा खने-खन भेटत टूटैत लोक

देव-दानवक डर तँ मानलो जाए
अपने डरें छुल-छुल मुतैत लोक

**** वर्ण---------१४*******

४१
देखिऔ तँ केना भेलैक गाछके कात भेने
चिड़ैआ बाजब छोड़ि देलक परात भेने

अहाँक दरस-परस बड़ड महँग अछि
सटि जैतहुँ अहाँक देह मे बसात भेने

आशो राखी तँ कनेक नीके जकाँ राखी भाइ
दालिए आ तीमन ने बचै छैक भात भेने

सभँहक घरमे एकटा अगत्ती जन्मए
सरकारक निन्न टुटै छै खुरफात भेने

लागि गेलै भरना सभँहक भाग-सोहाग
आब की हेतै आगि लग सप्पत-सात भेने

**** वर्ण---------१६*******

४२

भोज ने भात हर-हर गीत की करु
आब लागल भूख कहू मीत की करु

जिनगी अजगुत आदमी तँ विचित्र
केखनो घृणा तँ केखनो प्रीत की करु

प्रेम बदलि रहल समयोंसँ बेसी
केखनो आगि तँ केखनो सीत की करु

मनुख के पहिचानब बड़ड कठिन
केखनो बिग्घा केखनो बीत की करु

मिलेलहुँ गरासँ गरा तैऔ हमरा
भेटल दुश्मन नै मनमीत की करु

**** वर्ण---------१४*******

४३
एकटा चान हमरा लग रातिमे अबैए
देखू वएह कागत पर पाँतिमे अबैए

जीबाक लेल जी सकै छी अहाँक बिनु
मुदा देखू नोर बेर-बेर आँखिमे अबैए

आँखिसँ बेसी सपना नहि देखबाक चाही
फुनगीक आसमे बैसल माटिमे अबैए

पिजाएल लाठी किएक केकरा लेल कहू
अपने खुट्टाक बड़द जजातिमे अबैए

किएक कोनो नारिकेँ कहबै हड़ाशंखिनी
अपने लोकक गनती हड़ाहिमे अबैए

**** वर्ण---------१६*******

४४
गीतक आखर-आखर धारके मोन छैक
रीतक आखर-आखर धारके मोन छैक

लोक अपनेसँ विश्वासघात करैए मात्र
प्रीतक आखर-आखर धारके मोन छैक

हारि गेलासँ लाभे-लाभ हेबाक अवसर
जीतक आखर-आखर धारके मोन छैक

नहि देखबिऔक डर आगिक धाह केर
सीतक आखर-आखर धारके मोन छैक

कट्ठा-बिग्घाक उपजा लोक तँ नहि बूझत
बीतक आखर-आखर धारके मोन छैक

**** वर्ण---------१६*******

४५
लोहछल मोनक खुरफात थिक संबंध
असली हाथीक नकली दाँत थिक संबंध

कोना बचतै आयोगक गठन करू अहाँ
काटल गाछक नवका पात थिक संबंध

केकरोसँ दोस्ती तोड़ब ओतेक सहज नै
करेजमे तँ अंगदक लात थिक सबंध

हटा लिअ अपन मुँहसँ मास्क तुरंत
इ शुद्ध प्राणरक्षक बसात थिक सबंध

बिनु बजने बैसल रहू आ तमाशा देखू
बैसल बुढ़िआक शह-मात थिक सबंध

**** वर्ण---------१६*******

४६

साओन-भादवमे तँ सुखा गेल धार
एक ठोप पानि लेल बिका गेल धार

पानिसँ बाढ़ि छै की बाढ़िसँ पानि
देखू अपने पानिसँ दहा गेल धार

कोना बचतै पिआसल ठोर आ कंठ
घैलके तँ देखि कए नुका गेल धार

गप्प तँ चललै बिजली आ बान्ह पर
देखू सुनिते-सुनैत डेरा गेल धार

कछेर पर तँ होइ छलै रसलिल्ला
देखू तँ अनचोकेमे जुआ गेल धार

**** वर्ण---------१४*******

४७

पूछए लागल पात नुका कए रातिमे
बूझए लागल पात नुका कए रातिमे

हम तँ बेशर्मीक हद टपि गेलहुँ
हूथए लागल पात नुका कए रातिमे

नै छै पाइ जे कराओत इलाज दर्दक
कूथए लागल पात नुका कए रातिमे

सुआद तँ लगलैक खाली शोणित केर
चुसए लागल पात नुका कए रातिमे

अनचिन्हार स्पर्शक रहस्य बुझलहुँ
छूबए लागल पात नुका कए रातिमे

**** वर्ण---------१५*******

४८

इजोत लेल अन्हेर नगरी जाइत लोक
सपनेमे तँ सपनाक भात खाइत लोक

खेत तँ आब पटाओल जाइछ शोणितसँ
पानि महँक तेले जकाँ तँ छताइत लोक

जकरा जतेक भेटैक सएह बड़ अगत्ती
खएलाक पछातिओ तँ गुंगुआइत लोक

छोड़लकै डनिञाँ तेहन ने अगिनबान
मोनेमे पजरि मोनेमे पझाइत लोक

बसातक कमी तँ छैक गामोक बगैचामे
आक्सीजनेक बोतलमे तँ औनाइत लोक

**** वर्ण---------१६*******

४९
सभहँक ठोर पर बस अहिंक नाम
आब तँ चारु पहर बस अहिंक नाम

इ संसार तँ मरैए अहाँक रुपे देखि
सुन्दरताक जहर बस अहिंक नाम

आब तँ किछु नहि बचल हमरा लग
तँए सगरो उमर बस अहिंक नाम

देखू मोनक उत्फाल करेजक बिहाड़ि
आब आँखिक भमर बस अहिंक नाम

नीके तँ लगैए इ दुखक गाम हमरा
आब सुखक नगर बस अहिंक नाम

**** वर्ण---------१५*******

५०

अपने रुकि गेलहुँ अनका रोकबाक चक्करमे
अपने टुटि गेलहुँ अनका तोड़बाक चक्करमे

एकरा हम नसीब कहू की दूनू गोटाकमिलान
अपने फुटि गेलहुँ अनका फोड़बाक चक्करमे

करेजक एहन उत्फाल नै बुझल छल हमरा
अपने जुड़ि गेलहुँ अनका जोड़बाक चक्करमे

एतेक गहींर हेतैक खाधि खत्ता थाह नहि छल
अपने लुटि गेलहुँ अनका लोढ़बाक चक्करमे

शिखर पर पहुँचिते लोक बनैए अनचिन्हार
अपने छुटि गेलहुँ अनका छोड़बाक चक्करमे

**** वर्ण---------१९*******

५१
हम कीनल खुशी पर नाचू कतेक
हम लोहाक कंठसँ बाजू कतेक

रहस्य बेपारक बुझबै नहुँ-नहुँ
कमजोर हाथमे तँ तराजू कतेक

आधुनिको नै उत्तर-आधुनिक जुग
भावनाकेँ बेचैत लोक चालू कतेक

ने माए ने बाप ने तँ भाए ने बहीनि
इ सार-सरहोजि-सारि-साढू कतेक

मनुख तँ बनि जाइए अनचिन्हार
इ जानबरक रूप चिन्हाबू कतेक

**** वर्ण---------१४*******

५२

कथा जखन बिआहक लागल हेतैक
गरीबक बेटी तँ बड़ड कानल हेतैक

गोली लागल देह भेटत दसो दिशामे
कुशलक खोंइछ तँ कतौ बान्हल हेतैक

डेगे-डेग निद्रा देवीक प्रचार-प्रसार
आब केना कहू जे केओ जागल हेतैक

सड़ि गेलै एहि पोखरिक सुन्दर पानि
जुग-जुगान्तरसँ नहि उड़ाहल हेतैक

विश्वास करु समान कम नहि भेटत
देखिऔ बाटेमे बाट भजारल हेतैक

**** वर्ण---------१५*******

५३
कोनो सोहके केखनो नहि बिसारि राखब
मोनक गाछ केखनो नहि झखारि राखब

अबिते हएत मारिते रास कनैत आँखि
अहाँ थोड़ेक हँसी संगमे सम्हारि राखब

बहिते-बहैत बन्हा जाएब अहाँ बान्हसँ
संगमे हरदम कनिकबो जुआरि राखब

अबैत रहलाह नव-नव बिक्रमादित्य
कन्हासँ कहिआ इ बैताल उतारि राखब

नै कानू अबिते हएत रिलीफ लेने नेता
घर-दुआरि बना आँगन बहारि राखब

**** वर्ण---------१६*******

५४
बेमार छी मुदा बेमार नहि लगैत छी
दबाइ खाइ से कहिओ नहि चाहैत छी

हमरा अँहा नीक लगै छी सभ दिनसँ
मुदा प्रेम अछि से कहि नहि पबैत छी

विसर्जन बला मुरती छी हम धारमे
भसा देल गेलहुँ मुदा नहि डुबैत छी

सभ दिन हमरा लेल मधुश्रावनिए
टेमी दगेलाक बादो नहि कुहरैत छी

एकरा तँ प्रेम कहिऔ की स्वार्थ कहिऔ
आब तँ हुनके इसारा पर चलैत छी

**** वर्ण---------१५*******

५५
बाट टूटैत रहलैक हर समय
लक्ष्य छूटैत रहलैक हर समय

भाइ बाढ़ि-भूकंप आबै की नै आबै
बान्ह टूटैत रहलैक हर समय

समय सतयुग होइ की कलयुग
ओ तँ लुटैत रहलैक हर समय

भाइ धर्मक युद्ध होइ की अधर्मक
सेना कटैत रहलैक हर समय

बेसी तेज दौगने नै भेटत पदक
ओ तँ खसैत रहलैक हर समय

**** वर्ण---------१४*******

५६

बाउ किछु विरोधाभास तँ विचित्रे बुझाइत छैक
देखू पेटक आगि तँ पानिसँ नहि मिझाइत छैक

राम नाम तँ सत्त थिक मुदा श्मसाने धरि किएक
लोक रामसँ बेसी रावणें लेल घुरिआइत छैक

बम-गोली चलए लगलैक एना भए कए आब
देखू फटक्को छुटला पर लोक चकुआइत छैक

आब लोक छल-छद्म करए लगलै खुल्लमखुल्ला
शांति-महल पर युद्ध पताका फहराइत छैक

जले जिनगी थिक भेटत हरेक पोथीमे लिखल
बाढ़िमे तँए चारु दिस जिनगीए देखाइत छैक

**** वर्ण---------१९*******

५७
जँ देशमे आरो अन्ना हेतै
तँ इ भ्रष्टाचार सुन्ना हेतै

या तँ पुलिस या सरकार
दुन्नू दलालक मुन्ना हेतै

सत्य तँ निकलबे करतै
बान्हल कतबो जुन्ना हेतै

लिखेतै इतिहास खूनसँ
गजल हमर पन्ना हेतै

जे बदलतै अधलाहकेँ
ओ अकासमे चन्ना हेतै

**** वर्ण---------१०*******

सोलह अगस्त २०११सँ महात्मा गाँधीक दोसर रूप अन्ना हजारे द्वारा कएल गेल भ्रष्टाचार विरोधी अनशनकेँ समर्थनमे लिखल गेल।

५८

हमर मोन नहि भरैए मिलनक बेरमे
इ तँ अनचिन्हार बुझैए मिलनक बेरमे

जेहने विरह हो तेहने सिनेह सदिखन
अनचिन्हार मोन पड़ैए मिलनक बेरमे

इ जे देखै छी हमर देहक भाषा- अभिलाषा
आब अनचिन्हार कहैए मिलनक बेरमे

आब भगवानो जनैत छथिन्ह मोनक बात
देखू अनचिन्हार अबैए मिलनक बेरमे

हुनक रीत हुनकर प्रीत हुनकर गीत
आब अनचिन्हार लगैए मिलनक बेरमे

**** वर्ण---------१९*******

५९
अहाँ गप्प हमरा संग एहिना करैत रहू
आ एहिना मोन हमर अहाँ जुड़बैत रहू

ने तँ मोन भरतै ने करेज भरतै केकरो
हम अँहाके छूब अहाँ हमरा छूबैत रहू

चलू दोस्त नहि दुश्मने बनि जाउ हमर
आ करेजसँ करेज भिरा अहाँ लड़ैत रहू

बरसतै अमरित केर बरखा करेजमे
बस खाली अहाँ कनडेरिए तँ देखैत रहू

अनचिन्हार लिखत प्रेमक पाँति गजलमे
करेज पर हाथ राखि एकरा पढ़ैत रहू

**** वर्ण---------१७*******

६०

सोना भेटत सस्ता महँग चाउर देखब एक दिन
लोक एहिना तँ लूटत हबाउर देखब एक दिन

देशमे लोकसभा-विधानसभा बनि गेल शोकसभा
भूखल जनता तँ देतै धमाउर देखब एक दिन

हुनकर धोधिए देखि तँ मेटा गेल आब भूख हमर
अहूँ तँ एहिना करब चराउर देखब एक दिन

एकौ बेर देखि लेत हमरा अहाँके संग मे सजनी
तँ लोक जरत आ बनत छाउर देखब एक दिन

नोरक खिच्चरि दर्दक तिलबा आ कष्टक चुड़लाइ
एहिना अनचिन्हारक जड़ाउर देखब एक दिन

**** वर्ण---------२०*******

६१

आब दर्दक गीत गबैए अनचिन्हार
टूटल करेजके जोड़ैए अनचिन्हार

नै होइए भेंट-घाँट हुनकासँ केखनो
सपनेमे तँ देह छूबैए अनचिन्हार

जखने सटलै ठोरसँ ठोर तखनेसँ
प्रेम संसारमे घुमैए अनचिन्हार

जहिआसँ हुनका देखलक अझक्केमे
सपनेमे करोट फेरैए अनचिन्हार

जते मँहगाइ छै तते आमदनी नहि
दलाल लग बेटा बेचैए अनचिन्हार

**** वर्ण---------१५*******

६२

भाइ छोट्टे सन डिबिआ बारि दिऔ
अहाँ अन्हारक जड़ि उखाड़ि दिऔ

जँ काज नहि हुअए सोंझ ढ़गे तँ
सौंसे भाभट अपन पसारि दिऔ

भुतिआ गेलै मनुखताइ मोनसँ
कुशलक खढ़ी कने उचारि दिऔ

अनचिन्हारक मोन भीजल काठ
कने प्रेमक आगि तँ पजारि दिऔ

नीक काजके जे रोकत संसारमे
कने डाँड़ ओकर तँ ससारि दिऔ

**** वर्ण---------१३*******

६३

जादू-मंतर मारि देलकै ओ जाइत-जाइत
मोन केकरो हरि लेलकै ओ जाइत-जाइत

जकरा अबिते भोर आबि गेलै ठोर पर
आँखिमे साँझ आनि देलकै ओ जाइत-जाइत

हाथ थरथराइत छलैक फूलों तोड़बासँ
कोमल मोन तोड़ि देलकै ओ जाइत-जाइत

उखरल छलैक सुलबाइ मुदा तैओ देखू
आँकर-लोहा पचा लेलकै ओ जाइत-जाइत

अनचिन्हारक ठोर सटलै अनचिन्हारसँ
मुदा मुँह तँ घुमा लेलकै ओ जाइत-जाइत

**** वर्ण---------१७*******

६५

ने केकरो हीत ने तँ मुद्दैआ छी हम
अपने विरुद्धक लड़बैआ छी हम

हमर टूटल पाँखि देखि हँसू नहि
फाटल अकासक तँ चिड़ैआ छी हम

आरि लेल मारि करब नीको-बेजाओ
प्रेम-घृणाक तँ नीक गबैआ छी हम

इ जरुरी नहि जे जश भेटबे करत
नोंत देनिहार तँ घरबैआ छी हम

सम्मानक हमर नै तँ केकर हेतैक
ने सेर ने सवा-सेर अढ़ैआ छी हम

**** वर्ण---------१४*******

६५

शब्दक बरखासँ जरैत छी किएक
प्रेमक चरचासँ डरैत छी किएक

हमर गजल कोनो लाल रंग नहि
एना साँढ़ जकाँ भरतैक छी किएक

हम अँहाक दुश्मन छी सभदिनुका
एहन फूसि अहाँ बजैत छी किएक

कहू ने जे इ थन महँक दूध चाही
इ पड़रु जकाँ चुकरैत छी किएक

बिना कनने ओहो नै दूध पिआएत
तखन चुपचाप रहैत छी किएक

**** वर्ण---------१४*******

६६
कोम्हरसँ अएलै एहन फसादी रे जान
रे जान की लगलै बड़का पसाही रे जान

ओ जे मोटेलै बलू से कोना मोटेलै रे जान
खेने हेतै सभटा धन सरकारी रे जान

ओ तँ काजो करैए उपरसँ लातो खाइए
होइए एहने बुड़िबक बिहारी रे जान

पघिलैए जे लोहे जकाँ जमैए मोमे जकाँ
रे जान की कहबै ओहए सुतारी रे जान

हेतै कोना समाधान हड़तालेसँ रे जान
रे जान की तोड़बै कोना इ दिहाड़ी रे जान

**** वर्ण---------१६*******

६७

जहाँ देखलहुँ घर तहीँ धड़ खसा लेलहुँ
अँसगरेंमे तँ अपन जिनगी बसा लेलहुँ

लोक तँ फेकैत रहल पाथर पर पाथर
तकरे बीझि-बीझि एकटा घर बना लेलहुँ

झोल लागल देबाल पर टाँगल छै उदासी
अँहाक हँसी टाँगि हम ओकरा सजा लेलहुँ

मोन्मे भूर छातीमे धाह मुदा देह साबुत
अपन भावनाके दरबारमे नचा लेलहुँ

देखू संसार तँ छोड़ि देलक हमरा कातेमे
हम अपन देहके अपनेसँ भसा लेलहुँ

.

**** वर्ण---------१७*******

६८

इ गप्प जखन जड़िआ जाइत छैक
मोन तँ अनेरे भरिआ जाइत छैक

कण-कण जुड़ल पाथर बनि गेल
भिन्न भेने उड़िआ जाइत छैक

कतबो कटतै मोनक जड़ि केओ
अहाँक सोहसँ हरिआ जाइत छैक

अपनोके अनचिन्हार बना देलासँ
अनठीओ आबि गरिआ जाइत छैक

लोक जखन अबैए आमने-सामने
तखने तँ बात फरिआ जाइत छैक

**** वर्ण---------१४*******

६९

आरे तिरपित पारे तिरपित
कनही कूकूर माँड़े तिरपित

बैसि रहल इ सरकार चुना
देशक जनता ठाढ़े तिरपित

मनबैए मधुमास धनिकबा
हमर भाग अखाढ़े तिरपित

देखू उठौना लागल दूनू साँझ
इ बाछी मुदा लथारे तिरपित

कतबो झपबै नँगटिनियाँके
निर्लज्जी मुदा उघाड़े तिरपित

**** वर्ण---------१२*******

७०
अंगूर खट्टा लताम थुर्री जामुन लाल
इ गाछो तँ मचा रहल बड़का बबाल

अखबारी विकास आ इ जनता उदास
आब तँ इ बहिरा नाचए अपने ताल

देखू पाँच बरख पर सुरुज उगैए
रहैए बाँकी समय तँ बदरी-बिकाल

एतए लागल हाट अछि गमला केर
आब तँ एतए फूल तकैए कादो-थाल

देखू अनचिन्हार तँ अनचिन्हारे अछि
आब चिन्हारो बनल अछि बड़का काल

**** वर्ण---------१५*******

७१

इ तबीयत ठीक रहत
जँ इ रैयत ठीक रहत

खल-खल हँसती धरती
जँ इ नीयत ठीक रहत

हेतैक नीक देशक जँ इ
जेठरैयत ठीक रहत

बेकूफ बेटा टके काबिल
जँ इ किस्मत ठीक रहत

हेबे करतैक समाधान
जँ सिकायत ठीक रहत

**** वर्ण---------१०*******

७२

चीजे जखन बेकार छैक कमार की करतै
एतए लोहार की करतै सोनार की करतै

लोक जखन फँसि जाइए अपनहि जालमे
तखन छिपार की करतै देखार की करतै

बाउ जतए धन के घाँटी बजैत हो ओतए
इ लचार की करतै आ इ पिआर की करतै

खेत तँ छैक मुदा खेतिहर नहि एहिठाम
आब तँ इ बाढ़ि की करतै सुखाड़ की करतै

जखन बढ़ि जाए टीस तँ आशीष लग आउ
इ चिन्हार की करतै अनचिन्हार की करतै

**** वर्ण---------१७*******

७३

शराबके खराप नहि मानू सदिखन

एकरा कञियें जकाँ तँ जानू सदिखन

भाइ बेसी पीब तँ मोन भरि जाएत

मीत अहाँ थोड़बे-थोड़ आनू सदिखन

स्वर्गक सुख भेटतै जँ देखबै एम्हरो

आरती छोड़ि लबनी दफानू सदिखन

इ दुखक पहाड़ तँ बड़की टा हौ भाइ

संगमे तँ बोतल राखि फानू सदिखन

भरल छैक निशा हुनकर जौबनमे

पिबै छी कन्यियें मुदा बेकाबू सदिखन

**** वर्ण---------१५*******

रचना कतेक टका लगतै सपना किनबाक लेल

कहू जूटल घर सरदर अँगना किनबाक लेल

हम तँ मुक्त छी इ लिखनाइ-पढ़नाइ-बुझनाइसँ

रचना कतेक टका लगतै रचना किनबाक लेल

सत्त मानू हम काज करै छी लोकतंत्रक पद्धतिए

रचना कतेक टका लगतै पटना किनबाक लेल

हमरा देशमे पत्रकारिता गुलाम छै टी.आर.पीक

रचना कतेक टका लगतै घटना किनबाक लेल

देखू आब तँ भगवानो पड़ल छथि भक्तक फेरमे

रचना कतेक टका लगतै विधना किनबाक लेल

**** वर्ण------२०*******

७५

कहिओ सम कहिओ विषम

कहिओ बेसी तँ कहिओ कम

होइत रहलै अकाल मृत्यु

कहिओ गोली तँ कहिओ बम

खेलाइत रहलै देह पर

कहिओ देवी तँ कहिओ जम

निकलि रहल हरेक दिन

कहिओ टका तँ कहिओ दम

ठकि रहल अनचिन्हारके

कहिओ अहाँ तँ कहिओ हम

****** वर्ण———-११*********

७६

देश चुल्हामे गेल संसदमे हल्ला मचि रहल

कानून की भेल संसदमे हल्ला मचि रहल

अकाल, बाढ़ि, भूकंप इ सभ आबि चल गलैक

नेताक भत्ता लेल संसदमे हल्ला मचि रहल

घोटाला पर घोटाला बैसल कमीशन जाँचक

कमीशनक लेल संसदमे हल्ला मचि रहल

टूटि गेलै सपना आ मेटा गेलै आजादीक अर्थ

इ दलालक खेल संसदमे हल्ला मचि रहल

एकैटा लाश तँ भेटल बाट पर अनचिन्हार

ओकर जाति लेल संसदमे हल्ला मचि रहल

**** वर्ण---------१८*******

सोलह अगस्त २०११सँ महात्मा गाँधीक दोसर रूप अन्ना हजारे द्वारा कएल गेल भ्रष्टाचार विरोधी अनशनकेँ समर्थनमे लिखल गेल।

यथा एन्नी तथा ओन्नी एन्नी-ओन्नी तथैव च

यथा माए तथा बाप मुन्ना-मुन्नी तथैव च

हमर करेज जरैए अहाँ गीत लिखै छी

यथा ओ तथा अच्छर पन्ना-पन्नी तथैव च

देखहक इ बोंगहक पोता कोना करै हइ

यथा मुल्ला तथा हम सुन्ना-सुन्नी तथैव च

देवतो तँ जड़ि पकड़ै हइ बचले रहू

यथा मौगी तथा भूत ओझा-गुन्नी तथैव च

बान्हि भँइ दूरा पर लेबै ढ़ौआ पर ढ़ौआ

यथा हम तथा तों, आ बन्ना-बन्नी तथैव च

बचिअह अनचिन्हार भाइ एहि गाममे

यथा साँप तथा ओ जहर चिन्नी तथैव च

**** वर्ण---------१६*******

जँ सटतै ठोर अनचिन्हारसँ तँ बुझिऔ होली छैक

सदिखन बाजए केओ प्यारसँ तँ बुझिऔ होली छैक

बेसी टोइया-टापर देब नीक नै भाइ सदिखन

अहाँ निकलि जाएब अन्हारसँ तँ बुझिऔ होली छैक

देखू केहन-केहन गर्मी मगजमे रहै छैक बंधु

मनुख जँ बचि जाए गुमारसँ तँ बुझिऔ होली छैक

जहाँ कनही गाएक भिन्ने बथान तहाँ सुन्न-मसान

काज होइ सभहँक विचारसँ तँ बुझिऔ होली छैक

की दुख होइ छै चतुर्थीक राति मे नहि बुझि सकबै

सुनू जँ हँसी आबए कहार सँ तँ बुझिऔ होली छैक

**** वर्ण---------२०*******

रुबाइ

१

हिम्मति रखने काज सदा बनि जाएत

देह तँ जरत नाम मुदा रहि जाएत

इ जे देखा रहल समस्या केर पहाड़

ठानि लेब तँ रुइ जकाँ उड़ि जाएत

२

भेटत खुशी केकरो देखलाक बाद

केकरो ठोरसँ नाम सुनलाक बाद

कहबामे लागत बरु एकै-दू छन

मजा भेटत आइ लव यू कहलाक बाद

३

अपन बाँहिमे अहाँके गछारि लेब हम

नजरिसँ करेजमे उतारि लेब हम

एक बेर हँ तँ कहि कए देखिऔ

सगरो बाट पर आँचर पसारि देब हम

४

ठोरसँ ठोर सटतै तँ गीत जनमत

आँखिसँ आँखि मिलतै तँ प्रीत जनमत

दुश्मनीमे जिनगी केखनो नहि बिताउ

हाथमे हाथ देबै तँ मीत जनमत

५

इ जे अहाँक मूँह अछि गुलाब सन

आ आँखि जे लगैए शराब सन

सगरो दुनियाँ बताह भेल देखि कए

मोन हमरो लगैए बताह सन

६

हमरा जीवन मे अहीं केर खगता

अहाँ बिना पड़लै करेज हमर परता

खेलाइत रहू अहाँ हमरा मोन मे

बनू अहाँ देवी हम बनब भगता

७

हमरा ठोरक पिआस भेल छी अहाँ

हमरा मोनक हुलास भेल छी अहाँ

हम बिसरि ने पाएब अहाँ के कहिओ

टूटल करेजक विश्वास भेल छी अहाँ

८

ओ मोन पड़ै छथि तँ निन्न ने अबैए

देह होइए सुन्न नीको ने लगैए

चाहै छी हम जे ओ हमरे लग रहथि

ओ तँ ओ हुनक इयादो ने अबैए

९

हुनका सँ दूर करबा पर बिर्त लोक

अकास मे भूर करबा पर बिर्त लोक

हमही मरब हुनकर प्रेम मे या तँ

अपटी खेत मे मरबा पर बिर्त लोक

१०

एकटा हाथ बढ़लै हमरा दिस

एकटा डेग उठलै हमरा दिस

एतेक बड़का गप्प कोना कहू

एकटा नजरि उठलै हमरा दिस

११

रूपक रौद सँ जौबन पघलि जाएत

अहाँक श्वास सँ बसातो गमकि जाएत

अहाँक चलब करबैए मारि सगरो

ठमकब तँ मोन कने सम्हरि जाएत

१२

जहिआ हमर पिआर के जानब अहाँ

तहिआ ओकर तागति मानब अहाँ

आइ भने बिता लेब राति सूति कए

काल्हि सँ आँगुर पर दिन गानब अहाँ

१३

सपना जखन केकरो टूटि जाइत छैक

मोनक बात मोने मे रहि जाइत छैक

विश्वास सँ बड़का धोखा कोनो ने

टूटल करेज इ बात कहि जाइत छैक

१४

हुनका देखने उमकैए मोन हमर

संग मे रहने रभसैए मोन हमर

ओ जखन अबै छथि हमरा सोझाँ मे

सभटा झंझटि बिसरैए मोन हमर

१५

माटि मे पानि मे आगि आ बसात मे

दिन मे राति मे साँझ आ परात मे

देखाइ छी अहीं खाली चारु दिस

केहन तागति अछि अहाँक इयाद मे

१६

कहब कतेक बात अहाँ सँ हम सजनी

चलब कने दूर अहाँ संग हम सजनी

जँ पकड़बै अपन हाथ सँ हाथ हमर

जीबैत रहब बहुत दिन धरि हम सजनी

१७

बहुत बात रहि गेल घोलफच्चका मे

साँप-मगरमच्छ घूमि रहल चभच्चा मे

अहिंसा होइए सभ सँ नीक बुझलहुँ

राम-रज्यक कल्पना उठैए लुच्चा मे

१८

देह मोन एकै मिलन के बेर मे

रूप-रंग एकै मिलन के बेर मे

अहाँ भने चल जाउ दूर हमरा सँ

प्रेमक दर्द एकै मिलन के बेर मे

१९

हुनका जँ देखितहुँ तरि जइतहुँ हम

ओकरा पछाति बरु मरि जइतहुँ हम

अहाँ केर आँखिक निशा एहन नीक

जँ पीबितहुँ तँ सम्हरि जइतहुँ हम

२०

हुनका अबिते मोन हमर हरिआ गेल

आँखिक बात मोन मे फरिआ गेल

ओ केलथि केहन जादू हमरा पर

हुनक इयाद अबिते मोन भरिआ गेल

२१

हुनका लेल रूप सजा लेबाक चाही

आइ जबानी के लुटा देबाक चाही

काज नहि इजोत के हमरा-हुनका लग

इजोत लेल घोघ उठा लेबाक चाही

२२

जँ खोट ने रहतै सरकारक नेत मे

अनाज उपजबे करतै हमरो खेत मे

पसारए ने पड़तै हाथ दोसर ठाम

रहतै किछु कोठी आ किछु पेट मे

२३

चाम जँ अहाँक चाम सँ भीरि जेतै

बूझू मरलो मुरदा जीबि जेतै

इ प्रेमक आगि बड्ड कड़गर आगि

बूझू पाकलो बाँस लीबि जेतै

२४

जखन हुनकर घोघ उठेलहुँ सच मानू

आँखिक निशा सँ मतेलहुँ सच मानू

हुनक रूप भमर जाल लगैए हमरा

तैओ हुनके सँ नेह लगेलहुँ सच मानू

२५

एहि पार हम ओहि पार अहाँ बैसल छी

मुदा एक दोसराक करेज मे पैसल छी

जहाँ धरि देखी अहीँ देखाइ छी हमरा

देखू हमरो दिस एना अहाँ किएक रूसल छी

२६

कते दिन जिबैत रहब उधार के जिन्दगी

जिबैत रहू सदिखन पिआर के जिन्दगी

ने काज आएत समय पर ई धन-बीत

बिका जाएत पाइ-पाइ मे हजार के जिन्दगी

२७

रूप देखा बताह बना देलक छौंड़ी

सूतल मोन के जगा देलक छौंड़ी

की कहू छल ओ केहन हरजाइ

अचके मे हमरा कना देलक छौंड़ी

२८

अपन करेज अपने सँ डाहि लेब हम

प्रेमक महल अपने सँ ढ़ाहि लेब हम

अहाँ जा सकै छी हमरा जिनगी सँ

असगरे कत्तौ जिनगी काटि लेब हम

२९

इ जे अहाँक मूँह अछि गुलाब सन

आ आँखि लगैए अहाँक शराब सन

सगरो दुनियाँ बताह भेल देखि कए

मोन हमरो होइत रहैए खराब सन

३०

नोर बनि आँखि मे आबि जाउ

गीत बनि ठोर पर गाबि जाउ

बढ़ि गेल दूरी संगो रहैत

के कतेक दूर प्रेम सँ नापि जाउ

३१

हुनका देखिते बजा गेल आइ लव यू
मोन करेज पर लिखा गेल आइ लव यू
आब एकरा प्रेम कहू की बतहपनी
सुतली राति मे बजा गेल आइ लव यू

३२

प्रेम मे खून सुखा नोर बनि जाएत

हुनक ठोरक हँसी भोर बनि जाएत

चिन्हार मरबे करत हुनका देखि-देखि

अनचिन्हार जीबि चितचोर बनि जाएत

कता

१

जकर अगैंठीमोड़ एतेक सुन्दर

तकर देहक हिलकोर केहन हेतैक

जकर आँखिक नोर एतेक सुन्दर

तकर हँसी भरल ठोर केहन हेतैक

२

देखिते हुनका करेजक गाछ मजरि गेल

प्रेम गमकए लागल पहिल गोपी जकाँ

लगबिते चोभा गिनगी हमर सम्हरि गेल

बनि गेलहुँ हम कृष्ण अहाँ गोपी जकाँ



आशीष अनचिन्हार, जन्म- ०४-१२-१९८५ गाम- भटराघाट, बिस्फी। पिताक नाम- श्री कृष्ण चन्द्र मिश्र। माता- श्रीमती गम्भीरा मिश्र।

ई गजल संग्रह ''अनचिन्हार आखर'' लेखकक पहिल पोथी छियन्हि। ई गजल संग्रह मैथिलीक पहिल बहर आधारित गजल संग्रह अछि जइमे खाँटी मैथिली शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि। उपन्यास लेल दू-दू बेर बूकर पुरस्कार आ साहित्यक लेल नोबल पुरस्कारसँ सम्मानित जॉन मैक्सवेल कुट्सी भाषाक सन्दर्भमे कहने रहथि जे अफ्रीकान्स आ अंग्रेजी भाषाक द्विभाषिया माहौलमे हुनकर अंग्रेजी लेखन हुनका लेल बहुत रास संप्रेषण सम्बन्धी समस्या सोझाँ अनैत छल। ओ अफ्रीकान्ससँ अंग्रेजीमे तकर प्रतिकार स्वरूप ढेर रास अनुवाद केलन्हि। मुदा मैथिलीक साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता (आ किछु ऐ पुरस्कार लेल ललाइत आकांक्षी लोकनि), जे तथाकथित साहित्यकार लोकनि छथि से जइ प्रकारेँ मैथिली आ हिन्दी दुनूक डोरी पकड़ि माहौल खराप करबामे लागल छथि से जॉन मैक्सवेल कुट्सीसँ किछु शिक्षा ग्रहण कऽ सकथि से मात्र आशा कऽ सकै छी।

मैथिली गजलक पहिल दुर्भाग्य तखन देखा पड़ैत अछि जखन एतए गजलकेँ मुस्लिम धर्मसँ जोड़ि कऽ देखल जाए लगलै आ मुस्लिम धर्म आ ओकर साहित्यकेँ अछोप मानि लेल गेलै। गजलक प्रारम्भ इस्लामक आगमनसँ पूर्वक घटना अछि आ अवेस्ता आ वैदिक संस्कृत मध्य ढेर रास साम्य अछि। दोसर दुर्भाग्य मायानंद मिश्रक ओ कथन भेल जाहिमे ओ घोषणा केलथि जे मैथिलीमे गजल लिखले नै जा सकैए, हुनकर तात्पर्य दोसर रहन्हि मुदा लोक अही तरहेँ ओकस प्रस्तुत करए लागल, कारण ओ स्वयम् गीतल नामसँ गजल लिखलन्हि। मैथिली गजलमे "अनचिन्हार आखर" सन ब्लाग उपस्थित भेल जतए बहर (छन्दयुक्त) गजल आ गजलकारक लाइन लागि गेल। मुदा सभसँ बड़का दुर्भाग्य ई भेलै जे मैथिलीक किछु तथाकथित शाइर सभ रामदेव झा द्वारा बहर संबंधी विचारकेँ नकारि देलन्हि (देखू- लोकवेद आ लालकिलामे देवशंकर नवीन जीक आलेख)। जँ वर्तमानमे गजलक परिदृश्यकेँ देखी तँ मोटामोटी दूटा रेखा बनैत अछि (जकरा हम दू युगक नाम देने छी) पहिल भेल "जीवन युग" आ दोसर भेल "अनचिन्हार युग"। जीवन युग- ऐ युगक प्रारंभ हम जीवन झासँ केने छी जे आधुनिक मैथिली गजलक पिता मानल जाइ छथि मुदा ओ कम्मे गजल लीख सकला। मुदा हुनका बाद मायानंद, इन्दु, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सरस, रमेश, नरेन्द्र, राजेन्द्र विमल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रौशन जनकपुरी, अरविन्द ठाकुर, सुरेन्द्र नाथ, तारानंद वियोगी आदि गजलगो सभ भेलाह। समलोचन ठाकुर जीक बहुत रचना गजल अछि मुदा ओ अपने ओकर क्रम-विन्यास कविता-गीत जकाँ बना देने छथिन्ह मुदा किछु गजलक श्रेणीमे सेहो अबैए। ऐ ''जीवन युग''क गजलक प्रमुख विशेषता अछि बे-बहर अर्थात बिन छंदक गजल। ओना बहरकेँ के पूछैए जखन सुरेन्द्रनाथ जी काफियाक ओझरीमे फँसल रहि जाइ छथि।" अनचिन्हार युग"क प्रारंभ तखन भेल जखन इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल गजल आ शेरो-शाइरीकेँ समर्पित जालवृत्त "अनचिन्हार आखर" (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) क जन्म भेल।ऐ युगक किछु विशेषता रहल- गजलक परिभाषिक शब्द आ बहरक निर्धारण- "अनचिन्हारे आखर" हमरासँ १३ खंडमे (एखन धरि १३ खण्ड) "मैथिली गजल शास्त्र" लिखेलक। आ ई मैथिलीक पहिल एहन शास्त्र भेल जइमे गजलक विवेचन मैथिली भाषाक तत्वपर कएल गेलै। "अनचिन्हार आखर" गजल कहेबाक परंपरा शुरू केलक आ तइमे सुनील कुमार झा, दीप नारायण "विद्यार्थी", रोशन झा, प्रवीन चौधरी "प्रतीक", त्रिपुरारी कुमार शर्मा, विकास झा "रंजन", सद्रे आलम गौहर, ओमप्रकाश झा, मिहिर झा आदि गजलकार उभरि कए अएलाह। "अनचिन्हार युग" सँ पहिने गजलमे उर्दू-हिन्दी शब्दक भरमार छल, "अनचिन्हार आखर" ऐ कुतर्ककेँ ध्वस्त केलक आ गजलमे १००% मैथिली शब्दक प्रयोगकेँ सार्वजनिक केलक।मुदा सभसँ बड़का विशेषता जे निकलल ओ थिक मायानंद मिश्रक ओइ कथनक खंडन, जकर अभिप्राय छल जे मैथिलीमे बहरयुक्त गजल लिखल नै जा सकैए। "अनचिन्हार आखर" सरल वार्णिक, वार्णिक आ मात्रिक छन्दक अतिरिक्त फारसी/ उर्दू बहरमे सेहो मैथिली गजल लिखबाक शास्त्र ओ उदाहरण खाँटी मैथिली शब्दावलीमे प्रस्तुत केलक।

मैथिलीक पुनर्जागरणक ऐ समएमे ऐ पोथीक आगमन मैथिली आ मात्र मैथिलीक पक्षमे एकटा सार्थक हस्तक्षेप सिद्ध हएत। स्वतः स्फूर्त गजलमे जे गेयता आ प्रवाह होइ छै से ऐ संग्रहक सभ गजल, रुबाइ आ कतामे अहाँकेँ भेटत।-**गजेन्द्र ठाकुर**